सहजप्रकाश

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

ॐ

सहजप्रकाश

सहजोबाईकृत

★

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई-४

संस्करण : फरवरी २००८, सम्वत् २०६४

मूल्य २० रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate.
Pune -411 013.

प्रस्तावना

इसमें सत्संगका निर्णय, सद्गुरुमहिमा, साधु असाधुकी वाणी, साधुमहिमाका अंग. वैराग्य उपजावन नामका अंग, लघुताई, प्रशंसा, प्रेम, अजपास्मरण, तिथि वार वर्णन इत्यादि अनेक शब्द राग रागनियोंमें सहजोबाईकृत वर्णित हैं, जिसके पठन पाठनसे अज्ञानरूपी तिमिर नाश होकर ज्ञानका प्रकाश होता है.

दोहा ।

का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिये सांच ।
काम जु आवे कामरी, कालै करै किमांच ॥
जितनी प्रति पुस्तक मिली, उतनी लिखी निहार ।
भूल चूक सब क्षमाकरि, लीजो सुजन सम्हार ॥

आपका—पं० शिवनारायण शर्मा.
सेंगई-ग्रामनिवासी, परगना फीरोजाबाद,
जिला--आगरा.

समर्पण.

विदित हो कि, यह सहज प्रकाश नामक पुस्तक लिखी हुई पुरानी छिन्न भिन्न एक पुरुषके पास थी परंतु उसको इसका आशय कुछ ज्ञात नहीं था कि, इसमें क्या गुण हैं ? मैंने इसे गूदड़का लाल समझकर उससे प्रार्थना करके एक पक्षके लिये मांग लिया, अब उसको लोकोपकारार्थ श्रीसेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी को समर्पण कर और मुद्रित करानेकी प्रार्थना करता हूं. आशा है कि, सर्व महाशय मेरी इस अल्पज्ञताकी धृष्टताके अपराधको क्षमाकर इस पुस्तकसे लाभ उठावेंगे. इस स्थानपर उन महाशयोंके नामभी लिखे देता हूं जिन्होंने इसके छपानेकी सम्मति दी। पं० मिश्रीलालजी सेंगई, श्रीगंधर्वसिंहजी नंबरदार इटौसे, लाला हरनारायण सेंगई, पं० प्यारेलालजी सेंगई, मु० सरदार सिंहजी-सेंगई, हरलाल जिमीदार जिज्ञासु

हस्ताक्षर--पं० शिवनारायण शर्मा.

सेंगई--ग्रामनिवासी, परगना फीरोजाबाद.

जिला--आगरा.

ॐ

श्रीगणेशाय नमः।

सहजप्रकाश।

अथ सद्गुरुमहिमा वर्णन।

दोहा।

कर जोरूं परणाम करि, धरूं चरणपर शीश।
दादा गुरु सुखदेवजी, पूरण विश्वेवीस ॥ १ ॥
परमहंस तारनतरन, गुरुदेवन गुरुदेव।
अनभै वाणी दीजिये, सहजो पावै भेव ॥ २ ॥
चौ०=नमो नमो गुरुदेवन देवा।
नमो नमो गुरु अगम अभेवा ॥
नमो नमो निरलंभ निराशा।
नमो नमो परमातम वासा ॥

नमो नमो त्रिभुवनके स्वामी ।
नमो नमो गुरु अंतर्यामी ॥
नमो नमो गुरु पातक हरता ।
नमो नमो पारायण करता ॥
गतमत छाके आनँदरूपा ।
नमो नमो गुरु ब्रह्मस्वरूपा ॥
नमो नमो गुरु प्राणपियारे ।
नमो नमो त्रिगुणनते न्यारे ॥
भक्ति रु योग ज्ञानके राजा ।
सहजोंके पुरवो सब काजा ॥
जो कोइ शरण तुम्हारी आयो ।
तुरिया तत् विज्ञान बसायो ॥ ३ ॥

दोहा ।

निर्मल आनँद देत हो, ब्रह्मरूप करिदेत ।
जीवरूपकी आपदा, व्याधा सब हरिलेत ॥४॥

चौ०-नमो नमो सुखदेव गुसांई।
परगट करी भक्ति जगमाई॥
श्रीमद्भगवतभानु प्रकाशा।
पढ़सुनिकरे तिमिरको नाशा॥
ज्ञान योगकी नौका कीनी।
चरणदास केवटको दीनी॥
बहुतक पापी जीव चढाए।
भवसागरसूं पार लँघाए॥
किरपावली हाथमें राखै।
काहूते दुर्वचन न भाखै॥
अमृत वचन बोलि बैठावें।
नर नारीलों पतित तिरावें॥
कलियुगमें सतयुग विस्तारा।
रामभक्तिका खोल दुआरा॥
सुनि २ कै जिज्ञासी आवैं।
उनहूंके संदेह मिटावैं॥ ५॥

दोहा ।

गुरु हैं चारि प्रकारके, अपने अपने अंग ।
गुरु पारस दीपक गुरू, मलयागिरि गुरु भृंग ॥६॥
चरणदास समरत्थगुरु, सर्व अंग तिहिमाहिं ।
जैसेको तैसा मिलै, रीता छोडै नाहिं ॥ ७ ॥

चौ०—लोहेको पारस होइ लागै ।
कंचनकरै बेर नहिं ताकै ॥
सिखपलाय चंदन करिडारै ।
मलयागिरि होइ कारजसारै॥
सिख समान कीटकी आवै।
भृंगी होइ करि ताहि बनावै ॥
करै भृङ्गी ढील न कोई ।
पलटैरूप पाछलो सोई ॥
विनालोय दीपक सिख परसै ।
हो दीपक तिनहूंको दरसै ॥
बकसै अपनी ज्योति उजारा ।

होय चांदना भवन मँझारा ॥
चरणदास गुरु समरथ ऐसे ।
सहजोबाई भाषत जैसे ॥
सब गत सब अँगहैं उनमाहीं ।
उनसे भेद छिपौ कोउ नाहीं ॥८॥

दोहा ।

ज्ञान भक्ति अरु योगका, घटलेवे पहँचान ।
जैसी जाकी बुद्धि है, सोइ बतावे ध्यान ॥ ९ ॥

चौ०—आप सबनमें सबते न्यारे ।
चारिबुद्धिके मनुष्य सँवारे ॥
प्रथमबुद्धि जल लीक खिंचाई ।
खिंचतीजाय सोइ मिटिजाई ॥
दूजी बुद्धि लीक रस्तेकी ।
बलै मनोरथ मिटै हियेकी ॥
तिसरी बुद्धि पाहनकी रेखा ।
घटै सही पर बढै न नेका ॥

चौथी तेलबूंद जलमाहीं ।
फैलत फैलत फैलत जाहीं ॥
छोटेसे दीरघ परकाशै ।
बरण बरणके रंग निकासै ॥
तीन बुद्धि जगमें दरशावै ।
चौथि बुद्धि कोउ बिरले पावै ॥
सहजो बुद्धि सब थोथी कहिये ।
हरि गुरु कृपा सबहिमें चहिये ॥ १० ॥

दोहा ।

हरि किरपा जो होइतो, नाहिं होइतो नाहिं ।
पै गुरुकिरपादया बिनु,सकल बुद्धि बहि जाहिं ११

चौ०—रामतजू पै गुरु न विसारूं ।
गुरुके सम हरिको न निहारूं ॥
हरिने जन्म दियो जगमाहीं ।
गुरुने आवागमन छुटाहीं ॥
हरिने पांच चोर दिये साथा ।

गुरुने लई छुडाइ अनाथा ॥
हरिने कुटुंब जालमें गेरी ।
गुरुने काटी ममता बेरी ॥
हरिने रोग भोग उरझायो ।
गुरु योगी करि सबै छुटायो ॥
हरिने कर्म मर्म भरमायो ।
गुरुने आतमरूप लखायो ॥
हरिने मोसूं आप छिपायो ।
गुरुदीपकदै ताहि दिखायो ॥
फिर हरि बंध मुक्ति गत लाए ।
गुरुने सबही भरम मिटाए ॥
चरणदास पर तन मनवारों ।
गुरु न तजूं हरिको तजिडारों १२

दोहा ।

ब पर्वत स्याही करूं, वोरूं समुद मँझाय ।
रतीका कागजकरूं,गुरुस्तुति न समाय ॥१३॥

चौ०—गुरुकी स्तुति कहँलौं कीजै ।
बदला कहा गुरुनको दीजै ॥
गुरुका बदला दिया न जाई ।
मनमें उपजतहू सकुचाई ॥
इन नैनन जिन राम दिखाए ।
बंधनकोटि काटि मुकलाए ॥
अभैदान दीननको दीन्हें ।
देखत आप सरीखे कीन्हें ॥
गुरुकी कृपा अपरमपारे ।
गुणगावत समरसना हारे ॥
शेषसहसमुख निशिदिन गावैं ।
गुरुस्तुतिका अंत न पावैं ॥
मौनगहूं स्तुति का कहूं ।
बार बार चरणन शिरधरूं ॥
चरणदास महिमा अधिकाई ।
सर्वसँवारे सहजो बाई ॥ १४ ॥

गुरुमग दृढ़पग राखिये, डिगमग डिगमग छांड।
सहजो टेक टरै नहीं, शूर सती जो मांड ॥१६॥

चौ०—गुरुके प्रेमपंथ शिर कीजे।
आगा पीछा कबहुँ न दीजे॥
गुरुके पंथ होइ सो होई।
मारग आन चलो मत कोई॥
गुरुके पंथ पैजका पूरा।
गुरुके पंथ चलै सोई शूरा॥
गुरुके पंथ चलै बलयोधा।
गुरुके पंथ चलै कहा बोधा॥
गुरुके पंथ नहीं ठग लागैं।
गुरुके पंथ कपट भय भागैं॥
गुरुके पंथ मुक्ति उजियारा।
गुरुके पंथ नहीं संसारा॥
गुरुके पंथ मिटै दुखदोई।

गुरुके पंथ महासुख होई ॥
चरणदासको पंथ दुहेला ।
गुरुमुख चालै ताहि सुहेला ॥
गुरुके पंथ चलै सतिवादी ।
सहजो पावे भेद अनादी ॥ १६ ॥

दोहा ।

अड़सठ तीरथ गुरु चरण, परवीहोत अखंड
सहजो ऐसो धामना, सकल अंड ब्रह्मंड ॥१७
सब तीरथ गुरुके चरन, नितही परवी होय
सहजो चरणोदक लिये, पाप रहत नहिं कोय॥१८

चौ०—सब तीरथ गुरु चरणों लारे ।
चरणामृत दृढ़ सदा हमारे ॥
चरण कमलकी निसदिन पूजा ।
परसूँ और देव ना दूजा ॥
इष्ट हमारे गुरुके चरना ।
गुरुके चरण ध्यानहूँ धरना ॥

गुरुके चरण लगे सो त्यारे ।
गुरुके चरण प्राणसे प्यारे ॥
आशा मनसा और कर्मना ।
गुरुके चरण प्रेमचित्त धरना ॥
गुरुके चरण होइ सो होना ।
हानि लाभके दुखसुख मरना ॥
रणजीत गुरूजी चरण तुम्हारे ।
जीवन प्राण अधार अधारे ॥
गुरुके चरण मुक्तिफलदायक ।
सहजो गुरुके चरण सहायक॥ १९ ॥

दोहा ।

गुरुपग निहचै परशिये, गुरुपग हिरदै राख ।
सहजो गुरुपग ध्यानकर,गुरुबिन और न भाष२०
चौ०-गुरुके चरण कमल चित्त राखूँ ।
आठ सिद्धि नव निद्धिहु नाखूँ ॥
सकल पदारथ गुरुपग माहीं ।

गुरुपग परशे सबदुख जाहीं ॥
गतमत पलटें गुरुपग परशे ।
गुरुपग परशे त्रिभुवन दरशे ॥
गुरुपग परशे ब्रह्म विचारे ।
गुरुपग परशे माया छारे ॥
गुरुपग परशे योग युगंता ।
गुरुपग परशे जीवनमुक्ता ॥
गुरुपग परशे बंधनछूटें ।
मोह ममता की फांसी टूटें ॥
गुरुपग परशे हरि पद पावे ।
रहै अमर होइ गर्भ न आवे ॥
चरणदास पगमहिमा भारी ।
बार २ सहजो बलिहारी ॥ २१ ॥

दोहा ।

गुरु आज्ञा दृढ़ करि गहै, गुरुमत सहजो चाल ।
रोमर गुरुको रटै, सो शिषहोय निहाल ॥ २२ ॥

चौ०--गुरुकी आज्ञा दृढ़ करि गहिये।
गुरुकी आज्ञाहीमें रहिये॥
गुरु आज्ञा बिन काज न कीजे।
हानि होइ तो होने दीजे॥
गुरुकी आज्ञा विघ्न न होई।
गुरुकी आज्ञा गुरुमुख होई॥
गुरुकी आज्ञा भक्ति बढ़ावै।
गुरुकी आज्ञा पार लगावै॥
गुरुकी आज्ञा सकल शिरोमन।
गुरुकी आज्ञा चलै सु हरिजन।
गुरु आज्ञा मानै सोइ साधू।
गुरु आज्ञा पद भेद अगाधू॥
जो कोइ गुरुकी आज्ञा भूलै।
फिर फिर कष्ट गर्भमें झूलै॥
चरणदास गुरु आज्ञा पूरी।

विनआज्ञा करनी सब कूरी ॥
आज्ञाकारी गुरुमुख नीके ।
सहजो लोक भोगसुखीके ॥ २३ ॥

दोहा ।

गुरु आज्ञा मानै नहीं, गुरुहिं लगावें दोष
गुरुनिंदक जगमें दुखी, मुये न पावहिं मोष॥२४॥

चौ--०ऐसोंका दर्शन नहिं लीजै ।
चरचा बात--गोष्ठ नहिं कीजै ॥
उनका संग करै जो कोई ।
विमुख निगुरा नींदक होई ॥
गुरुदोषीकी गति मति गाऊँ ।
अपने मनहींको समझाऊँ ॥
उनकी चौरासी नहिं छूटे ।
कालजाल यमजोरा लूटे ॥
फिर २ योनी संकट आवें ।
गर्भवासमें बहु दुख पावें ॥

जगमें पातबघूला जैसे ।
जीवत प्रेत निशाचर जैसे ॥
मनमैला तनु सदा उदासी ।
गलमें डिंभ कपटकी फाँसी ॥
सहजो तिनते दूरहि भाजै ।
नामलेत मम रसना लाजै ॥ २५ ॥

दोहा ।

जो कछुकरै तो मनदुखी, मेटैं गुरुसुखरीति ।
वेदवचन समझै नहीं, चलै चालविपरीति ॥२६॥
साधु कहावै आपमें, चलै दुष्टकी चाल ।
बादलिये फूले फिरै, बहुत बजावै गाल ॥२७॥
चौ०—विमुख विषयी ज्ञान उचारे ।
पांचौं जीतन मनको मारे ॥
दारासुतको हरि गुरु जाने ।
तन मन विषय वास लिपिटाने ।
पाप पुण्यको झूठ बतावें ।

परनारी परधन चितलावैं ॥
महा अयोगी योग न ठाने ।
छलबल झूठ कपट सिधमाने॥
साधुसन्तको ठगिया जाने ।
रामभक्तिको तुच्छ बखाने ॥
ऐसे अपराधी बजमारे ।
तृष्णा काम क्रोधके जारे ॥
डूबे लोभ लहरिके माहीं ।
स्वप्ने क्षमा शील युत नाहीं ॥
हिंसा अकस लिये दुखदाई ।
मुख देखे नहिं सहजो बाई ॥ २८ ॥

दोहा ।

गुरूवचन हिय ले धरो, ज्यों कृपणनके दाम
भूमिगढे माथे दिये, सहजो लहै न राम ॥२९

चौ०--गुरुके वचनहिये बिच धारो ।
गुरुमुख गुरुके शब्द सम्हारो॥

तीनलोक यम जोरा लूटें ।
गुरुके शब्द बिना नहिं छूटें ॥
मोह नींदमें सब नर पागे ।
गुरुके शब्द विना नहिं जागे ॥
गुरुके शब्द शरण जो आवे ।
छूटे कुबुधि परमगति पावे ॥
गुरुके शब्द प्रेम उलझावै ।
गुरुशब्द हरि आन मिलावै ॥
गुरुके शब्द जीव बुधि नाशै ।
गुरुके शब्द अभयपद भासै ॥
गुरुके शब्द राह सोइ चलना ।
वेद पुराण कहा लै करना ॥
चरणदास गुरुशब्द तुम्हारे ।
हमरे भर्म फंद सबजारे ॥
गुणसब गुरुके वचनो माहीं ।
सहजो शिषसो विसरै नाहीं ॥ ३० ॥

दोहा ।

सिखके मानी सतगुरू, गुरु झिड़कै लखवार
सहजो द्वार न छोड़िये, यही धारनाधार ॥३१
गुरु दरशनकरि सहजिया, गुरुका कीजै ध्यान
गुरुकी सेवा कीजिये,तजिये कुल अभिमान॥३२
सतगुरु दाता सर्वके, तू कृपण कंगाल
गुरुमहिमा जाने नहीं, फँसो मोहके जाल॥३३
गुरुसों कछु न दुराइये, गुरुसों झूठ न बोल
बुरी भली खोटी खरी, गुरु आगे सब खोल॥३४
सहजो गुरु रक्षा करै, मेटै सब दुखद्वंद
मनकी जानै सबगुरू, कहा छिपा है अंध ॥३५
सहजो कारज जगत्के, गुरुविन पूरे नाहिं
हरितोगुरुविन क्यों मिले, समझदेख मनमाहिं३
परमेश्वरसूं गुरु बडे, गावत वेद पुरान
सहजो हरिके मुक्तिहैं, गुरुके घर भगवान ॥३७
अष्टादश अरु चार षट्, पढ़ पढ़ अर्थ कराहिं

भेद न पावें गुरु विना, सहजो सब भरमाहिं॥३८॥
सकलविकल सब छोड़िकर, गुरुचरणनचितलाव।
सहजो निहचै हरिजपौ, बहुरि न ऐसो दांव॥३९॥
दीपक लै गुरुज्ञान को, जगत अँधेरे माहिं।
काम क्रोध मद लोभमें, सहजो उरझेनाहिं॥४०॥
सहजो गुरु परतापसूं, होय समुद्दर पार।
वेद अर्थ गूंगा कहै, वाणी किति इकवार॥४१॥
सहजो सतगुरु के मिले, भए औरसूं और।
काम पलट गतिहंस होइ, पाई भूली ठौर॥४२॥
सहजो यह मनं सिलगता, काम क्रोधकी आग।
भली भई गुरुकी दया, शील क्षमाका बाग॥४३॥
निहचै यह मन डूबता, मोह लोभकी धार।
चरणदास सतगुरुमिले, सहजो लई उबार॥४४॥
ज्ञान दीप सतगुरु दियो, राखो काया कोट।
साजन बस दुर्जनभजे, निकसगई सब खोट॥४५॥
सहजो गुरु दीपक दियो, रोम २ उजियार।

तीनलोक द्रष्टा भए, मिटो भरम अँधियार ॥४६॥
सहजो गुरु दीपक दियो, नैन भए अनंत ।
आदि अंत मधि एकहो, सूझिपरे भगवंत ॥४७॥
सहजो गुरु दीपक दियो, देखो आतमरूप ।
तिमिर गयो चांदन भयो, पायो परगट गूप ॥४८॥
सहजो गुरु प्रसन्न होय, मेंटे मन संदेह ।
रोमरसों प्रेम उठि, भीजिगई सब देह ॥४९॥
सहजो गुरू प्रसन्न हो, एक कहो परसंग ।
तनमनते पलटी गई, रँगी प्रेमके रंग ॥५०॥
सहजो गुरू प्रसन्न हो, मूंदि लिये दोंउ नैन ।
फिरि मोसूं ऐसे कही, समझ लेहु यह सैन ॥५१॥
सहजो गुरु कृपाकरी, कहा कहूं मैं खोल ।
रोमर फुल्लित भई, मुख नहिं आवैं बोल ॥५२॥
चीटी जहां नचढ़ि सकै, सरसों न ठहराय ।
सहजोंको वा देशमें, सतगुरु दई बसाय ॥५३॥
सिख पौधा नोधा अमी, गुरू कृपाकी बाढ ।

सहजो तरुवर फैलवड,सुफल फलै वह झाड़॥८४॥
सहजो सिख ऐसा भला, जैसे माटीमोय।
आपासौंपि कुम्हारकूं, जोकछुहोयसोहोय॥८५॥
सहजो सिख ऐसा भली, जैसे चकई डोरि।
गुरुफेरै त्योंही फिरै, त्यागै अपनी खोरि॥८६॥
सहजो गुरु ऐसो मिलै, जैसे धोबी होय।
दैदेसाबुन ज्ञानका, कलिमल डारै धोय॥८७॥
सहजो गुरु ऐसो मिलै, मेटै सब सन्देह।
नीचऊंच देखै नहीं, सब पर बरसे मेह॥८८॥
सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे सूरज धूप।
सब जीवन कहँ चांदना, कहां रंक कहँ भूप॥८९॥
सहजो गुरु ऐसो मिलै, समदृष्टी निर्लोभ।
सिखको प्रेम समुद्रमें, करदे झोवा झोव॥९०॥
सहजो गुरु बहुतक फिरैं,ज्ञान ध्यान शुधनाँह।
तारि सके नहीं एकको, गहैं बहुतकी बांह॥९१॥
ऐसे गुरु तो बहुत हैं धूत धूत धन लेहिं।

सहजो सतगुरु जो मिलै, मुक्ति धाम फल देहि ॥६२
कुटुँब जाल जित तित रुपो, पशु पक्षी नर माहिं ।
सहजो गुरु भडकी बचे, निगुरा उरझत जाहिं ६३
बार २ नाते मिलै, लख चौरासी माँह ।
सहजो सतगुरु ना मिलैं, पकरि निकासै बाँह ॥६४
जन्म जन्म हर संगही, मिलि रहो आठौ याम ।
सहजो गुरु के ना मिले, पायो ना विश्राम ॥६५॥
सहजो गुरु पूरण मिलै, शिश मैला घट चित्त ।
मेह बरसै कालरा जिमीं, खेत न उपजै छित्त॥६६
मलयागिरि के निकट जो, सब द्रुम चंदन होय
कीकर सीसौं चीढ़ तरु, हुए न कबहूँ होय ॥६७
सिखमाटी सिखपाथरा, सिखलकड़ी सम जोय
सहजो गुरु पारस लगै, कैसे कंचन होय ॥६८
शिष्य सराई तेल विना, बाती भी नहिं माहिं
सहजो गुरु दीपक मिले, चांदन होसी नाहिं ॥६९
सहजो गुरु समरथ कला, सर्वदेश सब अंग ।

कोई कैसा शिष्य हो, सबपर गैरै रंग ॥ ७० ॥
सहजो गुरु रँगरेजसा, सबहीको रंगिदेत ।
जैसा तैसा वसनहो, जो कोई आवे श्वेत ॥७१॥
सहजो गुरुदर्शन दियो, पूरिरहे सबठौर ।
जहां तहां गुरुही लखे, दृष्टि न आवे और ॥७२॥
देखतही आनँदभए, सद्गुरु पहुँचे आय ।
भवसागर दुख रूपसों, सहजो लई बचाय॥७३॥
चरणदासके चरणपर, सहजो वारे प्रान ।
जगत व्याधिसों काढ़िकर, राखीपद निर्वान ॥७४॥
सहजो गुरुमहिमा कही, पढ़ि सुनि हियो सिराय ।
उपजै गुरुकी भक्तिदृढ, दुविधा दुर्मतिजाय ॥७५

इति सद्गुरुमहिमा अंगवर्णन सम्पूर्ण ।

साधुकी बोली ।

मीठी बोली १, चरपरीबोली २, अमृतवचन बोली३, शीतलसुगंधबोली ४, महाफूल बोली ५,

शीलबोली ६, विघ्नविदार बोली ७, शुद्धमुख
ज्ञनबोली ८, भ्रमनिवारणबोली ९, भक्तिहृढाव
बोली १०, स्थिरबोली ११, सांचीबोली १२

दुष्टोंकी बोली ।

पाचनबोली १, कांटेदार बोली २, विषभुजं
बोली ३, अग्निस्वरूप बोली ४, अंकडेस्व
बोली ५, हियाबेध बोली ६, खट्टी बोली
कडुवीदुर्गंधबोली, ८, झूठीबोली ९, नरम
बोली १०, निगुरी बोली ११; डिगमिग
बोली १२ ।

अथ साधुमहिमा अंग वर्णन ।

दोहा ।

साधु मिले गुरुपाइयां, मिटगये सब संदे
सहजों कोसम होगयो, कह गिरिवर कह गेह॥
साधुमिले पूरीभई, जन्म जन्मकी आ
सहजो पायो भावतो, सतसंगतिमें वास ॥

सहजो साधनके मिले, मनभयो हरिके रूप ।
चाहगई थिरता भई, रंक लखा सोई भूप ॥३॥
साधुमिले हरिही मिले, मेरे मन परतीति ।
सहजो सूरज धूप ज्यों, जल पालेकीं रीति ॥ ४ ॥
साधुमिले दुख सब गये, मंगल भये शरीर ।
वचन सुनतही मिटिगये, जन्म मरणकी पीर॥५॥
साधु संगमें चांदना, सकल अँधेरा और ।
सहजो दुर्लभ पाइयो, सत संगतिमें ठौर ॥ ६ ॥
सतसंगतिकी नावमें, मनदीजे नरनार ।
टेकबली दृढ़भक्तिकी, सहजो उतरे पार ॥ ७ ॥
साधुसङ्ग तीरथ बड़ो, तामें नीर विचार ।
सहजो न्हाये पाइये, मुक्ति पदारथ चार ॥ ८ ॥
जो आवे सत्संगमें, जात वर्ण कुलखोय ।
सहजो मैल कुचील जल,मिलै सुगंगा होय ॥९॥
सहजो संगति साधुकी, काग हंस होजाय ।
तजके भक्ष्याभक्ष्यको, मोती चुगि २ खाय॥१०

जब चेतै जबहीं भला, मोहनींद सूं जाग
साधोंकी संगति मिलै, सहजो ऊँचे भाग ॥११

जो जन आवैं टूटिकरि, साधू हो दरशाय
सहजो सांभर खेतमें, गिरिसांभर होजाय ॥१२

सहजो संगति साधुकी, भलीभई कुशलात
नातर आवागमनमें, यमहीं करले घात ॥ १३

सहजो संगति साधुकी, छूटे सकल वियाध
दुर्मति पाप रहै नहीं, लागै रंग अगाध ॥१४

साधुवृक्ष वाणी कली, चर्चा फूले फूल
सहजो सङ्गति बागमें, नाना फलरहे झूल ॥१५

सहजो दर्शन साधुका, दो नैनोंभर लेह
तिहूपाप निशि जाहिंगे, शीतल होगी देह ॥१६

सहजो दर्शन साधुका, देखूं वारूं प्राण
जिनकी कृपा पाइये, निर्भय पद निर्वाण ॥१७

दुष्टनकी महिमा करूं, सुनियो सन्त सुजान
ताना दे दे दृढ़करैं, भक्तियोग अरु ज्ञान ॥ १८

चौ०—धनदुष्टी जो दृढता देई ।
निंदाकरि पातक हरिलेई ॥
दुष्टी त्यागी देखे भारी ।
समझ सोचि सहजो बलहारी ॥
तजदइ साधु संग गुरुचरना ।
त्यागी भक्ति ध्यानका धरना ॥
त्यागी उत्तम रहनी गहनी ।
त्यागी हरिकी लीला कहनी ॥
त्यागे वचन विमल सुखदाई ।
तजिदियो सांच झूठ लवलाई ॥
जत सतशील क्षमा तजि दीन्हा।
सो साधू माथे धरिलीन्हा ॥
तजी दीनता सुबुधि चिताई ।
सो गरीब साधोने पाई ॥
तजि वैराग्य और संतोषा ।
सब विधि तजो राम गत मोषा ॥१९॥

दोहा ।

भलीचाल दुष्टी तजें, ऐसा त्यागी होय
बुरी चाल साधू तजें, तजनकहें सबकोय॥२०

चौ०—साधु सोइ जो कायासाधैं ।
तजि आलस अरु वाद विवादें॥
गहै धारणा सबगति भारी ।
तजे विकलता अस्तुति गारी ॥
क्षमावंत धीरजको धारे ।
पांचों वशकरि मनको मारे ॥
त्यागे झूंठ सांच मुख बोले ।
चित्त स्थिर इत उत नहिं डोले॥
तनु जगमें मन हरिके पासा ।
लोकभोग सूं सदा उदासा ॥
जतसत नखशिख शीतलताई ।
तन मन वचन सकल सुखदाई॥
निर्गुण ध्यानी ब्रह्मज्ञानी ।

मुखसूं बोले अमृतवानी ॥
समुझि एकताभाव न दूजे ।
जिनके चरण सहजिया पूजे ॥ २१ ॥

दोहा ।

निरहूं दी निरवैरता, सहजो अरु निर्वास ।
संतोषी निर्मलदशा, तकै न परकी आस ॥ २२ ॥
ज्ञानमध्य स्थिर दशा, ज्ञानमध्य गलतान ।
सहजो साधू रामके, तजैं बडाई मान ॥ २३ ॥
जो सोवै तो स्वप्नमें, जो जागै हरिनाम ।
जो बोलै तो हरिकथा, भक्तिकरै निष्काम ॥२४॥
तन मन मेटे खेद सब, तजि उपाधिकी चाल ।
सहजो साधू रामके, तजैं कनक अरु बाल ॥२५॥
दीरघ बुधि जिनकी महा, शील सदाही नैन ।
चेतनता हिरदे बसै, सहजो शीतलबैन ॥२६॥
तनको साधेही रहै, चितको राखै हाथ ।

सहजो मनको यों गहै, चलै न इन्द्रिन साथ॥२७॥
नितही प्रेम पगे रहै, छके रहै निजरूप।
समदृष्टी सहजो कहैं, समझै रंक न भूप॥ २८॥
सुरत नहीं व्यवहारमें, ज्यों गत रीतिसूं पीठ।
सन्मुख है गुरु भक्तिमें, सहजो हरिके ईठ॥२९॥
साधु असंगी सँग तजें, आतमहीको संग।
बोधरूप आनंदमें, पिये सहजको रंग॥ ३०॥
दुर्जन ना सज्जन नहीं, नहीं वैर नहिं प्रीति।
संकल विकल उनके नहीं, सहजो हरिजनरीति॥३१॥
सहजो हरिजन मुक्त हैं, डारि रूईकी पोट।
चाहगई संशय मिटा, बन्धन छूटे कोट॥३२॥
राग द्वेषसूं रहित हैं, वैरागी निबंध।
सहजो इच्छा ना रही, मायाब्रह्मकि संध॥३३॥
आसन संयम साधकर, साधै प्राण अपान।
सहजो मुद्रा जो सधै, तो योगी परमान॥३४॥

तीनों बंध लगाइके, अनहद सुनै टंकोर ।
सहजो शुन्न समाधिमें, नहीं साँझ नहिं भोर॥३५॥
नासुख विद्याके पढे, नासुख वादविवाद ।
साधु सुखी सहजोकहै, लागै शुन्नसमाधि ॥३६॥
मुये दुखी जीवतदुखी, दुखी भूप आहार ।
साधुसुखी सहजो कहै, पायो नित्य विहार॥३७॥
चाह दुखी आशादुखी, महादुखी अज्ञान ।
साधुसुखी सहजो कहै, पाया केवलज्ञान ॥३८॥
धनवंते सबही दुखी, निर्धन हैं दुखरूप ।
साधुसुखी सहजो कहै, पायो भेद अनूप ॥३९॥
रंकदुखी राजादुखी, दुखी सकल संसार ।
साधुसुखी सहजो कहै, पायो भेद अपार ॥४०॥
नासुख दारा सुत महल, सुख भूप भये ।
साधु सुखी सहजो कहै, तृष्णरोग गये ॥४१॥

इति साधु महिमा अंगवर्णन सम्पूर्ण ।

अथ विराग उपजावनका अंगवर्णन ।

दोहा ।

सहजो भजु हरिनामको, तजो जगतसूं नेह ।
अपना तो कोइ है नहीं, अपनी सगी न देह ॥१

यही कही गुरुदेवजी, यही पुकारैं संत ।
सहजो तजिया जगतको, तोहि तजैगो अंत ॥२

कलह कल्पना दुख घना, सदा रहै मन भंग ।
अकस भरेको छोंडिये, सहजो जग बेढंग ॥३

ज्यों संडचासी लोहकी, क्षणपानी क्षण आग ।
ऐसे दुख सुख जगतका, सहजो तू मतियाग ॥४

अचरज जीवन जगतमें, मरिबो साँचो जान ।
सहजो औसर जात है, हरिसों ना पहिचान ॥५

जगशय्या जगमें पगा, जगसंग दीन्हे मान ।
रामतजे जगसूं रचे, सहजो निहचे हान ॥६

झूठा नाता जगतका, झूठा है घरवास।
यह तनुझूठा देखिकर, सहजो भई उदास ॥ ७ ॥
जबलगि चावल धानमें, तबलगि उपजै आय।
जग छिलकेको तजि निकस,मुक्तरूप होजाय॥८॥
कुटुँब सँघाती बीचमें, आदि अंत नहिं होय।
बीचमिले बीचहि गये, सहजो संग न कोय ॥९॥
सहजो स्वारथ सबलगे, दारा सुत अरु वीर।
जीवित जातै बैल ज्यों, मुये बटावें सीर ॥१०॥
कोइ किसीके संग ना, रोग मरण दुखबंध।
इतने पर अपनों कहैं, सहजो ये नर अंध ॥११॥
दर्द बटाइ सके नहीं, मुये न चालें साथ।
सहजो क्योंकर आपने, सबनाते बरबाद ॥१२॥
मर बिछुरै जो कुटुँबसों, बहुरि न देखै आय।
महल द्रव्यसंतानको, सहजो पचै बलाय॥१३॥
मर बिछुरन यों होयगो, ज्यों तरुवरसूं पात।
सहजो काया प्राणजो,जो मुखसेती बात ॥१४॥

सहजो जीवत सबसगे, मुये निकट नहिं जायँ।
रोवें स्वारथ आपने, सुपने देखि डरायँ ॥१५॥
सहजो धन मांगे कुटुँब, गाडा धरा बताय।
जो कुछ हैं सो देहमें, फिर पाछे मरिजाव॥१६॥
मुखदेखैं ढापैं भजै, तडदे तोडैं नेह।
सहजो पति सुत निज हितू,जारि करैंगे खेह॥१७॥
काढ काढ वेगी कहै, भीतर बाहरलोय।
जीव छुटे सहजो कहे, तनुका सगा न कोय॥१८॥
यह मन्दर यह ना रहै, यह धन यह संतान।
तेरो न सहजो कहै, काहे करत गुमान ॥ १९ ॥
जन्मजुआसो हारहो, कियो न लाहाशूल।
डारपात फल सींचि करि,सहजो काटतमूल॥२०॥
सहजो गुरुपरतापसूं, ऐसी जानपरी।
नहीं भरोसा श्वासका आगे मौत खरी ॥२१॥
भीतरका भीतर खुलै, कै बाहर खुलिजाय।
देहखेह है जायगी, जैहौ जन्म गँवाय ॥ २२ ॥

श्वासा दीपकके बुझे, होत अँधेरी देह ।
सहजशून्य प्राणी बने, जबकैसो हरिनेह ॥२३॥
सहजो फिरि पछितायगो, श्वासनिकस जबजाय ।
तबलगि रहै शरीरमें, राम सुमिरि गुणगाय॥२४॥
श्वास खजानो जात हैं, ताकी सूधी नाहिं ।
सहजो खरचौ कारहो,करि हिसाब घरमाहिं॥२५॥
सहजो नौबति श्वासकी, बाजतिहै दिनरैन ।
मूरख सोवतहैं महा, चेतनको नहिं चैन ॥२६॥
हरिणाकुशसे हो मिटे, दुर्योधन शिशुपाल ।
कुंभकरण रावण गये, सहजो खाये काल ॥२७॥
निश्चय मरना सहजिया, जीवनकी नहिं आश ।
कै टूटीसी झोपडी, कै मंदिरमें वास ॥ २८ ॥
कै गरीबशिर टोकरी, कै शिर छत्तर होय ।
जन्ममरणमें एकसे, सहजो भांति न दोय ॥२९॥
मरनाहै रहना नहीं, जाना वाही ठौर ।
सहजो कै कंगालहो, कैहो द्रव्य करोर ॥३०॥

आपनहूं थिर होय जो, करै औरको सोग ।
सहजो साथी नावके, सभी बटाऊ लोग ॥३१॥
सहज बटाऊ बाटके, मिलि २ बिछुरत जाहिं ।
बैठ२बहुतक गये, जगतरुवरकी छांहिं ॥ ३२ ॥
यह रस्ता बहतारहै, थँभे नहीं क्षण एक ।
बहुआवें बहुजातहैं, सहजो आंखिन देख॥३३॥
जगदेखत तुम जाउगे, तुम देखत जगजाय ।
सहजो योंही रीति है,मति करि सोच उपाय॥३४॥
मुये सो काया जालई, बहुरि न मिलिहै आय ।
रोयेते कह होतहै, सहजो झुरै बलाय ॥ ३५ ॥
झुरि२कै पिंजराभये, रोय गँवाये नैन ।
मर गये सो नामिलैं, सहजो सुनैं न वैन ॥३६॥
जो रोयेसे बाहुरैं, तौ रोवों दिन राति ।
तनछीजै वह नामिलै, सहजो कूडी बात ॥३७॥
काहेको रोवतरहौ, कल्पत होवै काज ।
सहजो मुए सो मरगए,आवें काल्ह न आज॥३८॥

देह निकट तेरे पडी, जीव अमरहै नित्त ।
दोमें मूआ कौनसा, कासू तेरा हित्त ॥ ३९ ॥
जो तेरा हित देहसूं, नखशिख नाहीं खंड ।
जीव अमर सहजो कहै, व्यापक और अखंड४०॥
तेरा था तो क्यों मुआ, गहिक्यो न राखा बांह ।
सहजो बहुतक मिलछुटे चौरासीके मांह ॥ ४१ ॥
कबहुँक तेरा बापहै, कबहुँक तेरा पूत ।
कबहुँक तेरा मित्रहै, कबहुँक तेरा दूत ॥ ४२ ॥
जो तेरे संग प्यारथा, जाता वाके साथ ।
कै वाहीकूं राखता, सहजों गहिकै हाथ ॥ ४३ ॥
कल्पि रोय पछिताय थकि, नेह तजोगे कूर ।
पहलेहीसूं जो तजै, सहजो समरथ शूर ॥ ४४ ॥
यों खाता यों सोवता, मीठे कहता बोल ।
यह विचार तू मत करै, चितरहै डावाँडोल ॥४५॥
बैठि पहर यों चालता, वस्तर भूषण लाल ।
यह विचार तू मत करै, छल रूपी जग जाल४६॥

आगे रोरो क्या किया, अब क्यों रोवे भांड ।
संग न आया ना चलै, यह जग झूठा मांड॥४७
आगे मुए सो जाचुके, तूभी रहै न कोय ।
सहजो परको क्याझुरै, आप नहीं को रोय ॥४८
बहुत गई थोरी रही, यह भी रहसी नांहि ।
जन्म जायहरिभक्तिविन,सहजोझुरमनमांहि॥४९
उपज २ फिर २ मरौ, यददें दारुण दुःख ।
लाज नहीं सहजोकहै, धृग तुम्हारो मुख ॥५०
पशुपक्षी नर सुर असुर, थिर चर कीट पतंग ।
सबही उत्पति कर्मकी, सहजो नाना अंग ॥५१
कर्मनिके प्रेरे फिरौ, जन्म जन्म दुख होय ।
मुक्ति विचारो सहजिया,आवागमन जा खोय॥५२
जन्म चलोही जातहै, एदिन आछे नाहिं ।
जीवत जागहिं नाकरी, बैठोगे किहि ठाहिं ॥५३
सहजो मन रहै वासना, जैसी पावै ठौर ।
जहां आश जहां वासहै,निश्चय करी करोर॥५४

देह छुटै मनमें रहै, सहजो जैसी आस ।
देह जन्म जैसी मिलै, जैसेही घरबास ॥ ६६ ॥
चौ०—जाकी रहै आश मंदिरमें ।
होकरि घूस वसै सो घरमें ॥
रहै वासना द्रव्य मँझारा ।
जनमैं नाग होइ फुनकारा ॥
रहै बासना तिरिया माहीं ।
कोढी श्वान धरै तनु आहीं ॥
रहे वासना तियको बरकी ।
कुतिया होइ चूहरे घरकी ॥
जाकी रहैं पुत्रमें आसा ।
सूवर जन्म नीचघर वासा ॥
जाका मन रहै राजदुआरा ।
हस्ती हो शिरमें ले छारा ॥
रहै वासना नीर पियासी ।
मीनदेह घर जलकी बासी ॥

रहै वासना बाहन संगा ।
होय जन्म ले वाहन अंगा ॥
जहाँ वासना जितही जाई ।
यह मत वेद पुराणन गाई ॥
चरणदास गुरु मोहि बताई ।
तजो वासना सहजो बाई ॥ ९६ ॥

दोहा ।

सहजो लोक परलोककी, नहीं बासना ताहि ।
सो वह ब्रह्मस्वरूपहै, सागर लहर समाहि ॥९७
जाकी गुरुमें वासना, सो पावै भगवान ।
सहजो चौथे पद बसै, गावत वेद पुरान ॥९८
परमेश्वरकी वासना, अंत समै मनमाहिं ।
तनु छूटै हरिको मिलै, उपजै विनशै नाहिं ॥९९
साधुसंगकी वासना, जिहि घट पूरी जोय ।
मनुष जन्म सतसंग मिलि, भक्ती प्रापतिहोय१००
सहजो हरिके नामकी, रहै वासना पीर ।

चौराशी संकट कटै, यमकी छूटै पीर ॥ ६१ ॥
चौराशी कायापहर, दुख सहै नानात्रास ।
भलीभई अबके कुशल, चरणदासकी आश ॥६२॥
चौराशीके त्रास सुनि, यम किंकरकी मार ।
सहजो आए गुरुशरण, सुमिरे सिरजनहार ॥६३॥
धन यौवन सुख संपदा, बादरकीसी छाँह ।
सहजो आखिरधूपहै, चौराशीके माँह ॥ ६४ ॥
चौरासी योनी भुगति, पायो मनुष्य शरीर ।
सहजो चूके भक्ति बिन, फिर चौराशी पीर ॥६५॥
जन्म मरण अब कहत हूं, कहूं अवस्था चार ।
चौराशी यम दंडको, भिन्न भिन्न विस्तार ॥६६॥
चरणदास आज्ञादई, सहजो परगट गाय ।
तासूं पढि सुनि जीवकी, सकल बंदि कटिजाय६७
चौ०—पापी जीव गर्भ जब आवै ।
भवन अँधेरे दुख बहु पावै ॥
तलमूँडी ऊपरको पाऊं ।

मुसलंघी और विष्ठा ठाऊं ॥
जठर अग्नि इकरस जहँ लागी ।
अधिक तपै जहँ पलत अभागी॥
खट्टा मीठा माता खावै ।
लाग छुरीसी बहु दुखपावै ॥
आप दुखी माता दुखपाया ।
दशै महीने जगमें आया ॥
जगजंजाल देखि करि रोयो ।
नर नारी मिलि सबै विगोयो॥
माया मोह पवनलग भूला ।
सहजो गोद पालने झूला ॥
नाते सभी लगै उठिझूटे ।
पड़ा बंधमें कैसे छूटे ॥ ६८॥

दोहा ।

सब नाते उठि उठिलगैं, रोम रोम लिया बंध
सहजो यह बीरल मिला, फिर२भूला अंध ॥६९

चौ०—कोई कहै मैं इसकी माई।
कोई कहै लालाकी दाई॥
कोई कहै यह सुंदर हीरा।
गोद खिलाऊं अपना वीरा॥
कोई कहै मैं याका बापू।
बालक पाया पुण्य प्रतापू॥
कोई कहै मैं याकी बूआ।
चाचा कहै भतीजा हूआ॥
कोई कहै यह मेरा भाई।
कोई कहै मैं दादी आई॥
कोई कहै यह पोता बाला।
कोई कहै यह मेरा साला॥
कोई कहै मैं याकी बहनी।
कोई कहै मैं याकी नानी॥
कोई कहै मैं इसका मामा।
लाया खांड कढूलें जामा॥

कोई कहै मैं याका नाना ।
मामीने भनैंजकरिजाना ॥७०॥

दोहा ।

सब नाते लिये मानकर, घेरा घेरी घेर
झूठे सांचेसे लगे, स्वपने कंचन मेह ॥ ७१
पित्रदेव तू गोतिया, गिरह नक्षत्र सौन
सहजो बंधन बँधि गये, ताहि छुटावै कौन ॥७२

चौ०—गूंगा घी कहने जब सीखा ।
सेहू नाम मदारी भीखा ॥
मांय बाप ले नाम पुकारे ।
जब किलके तब तन मन वारे ॥
मुख चूमें और कंठ लगावें ।
लेले जहां तहाँ पगधावें ॥
कबहूँ झडपनजर होजावे ।
कबहूँ खांसी बहुत सतावे ॥

चलै पेट कबहूं बहु रोवै।
खीजै बहुत नेक नहिं सोवै॥
ज्वर कबहूं दूखैं दोउ नैना।
पुनि२दुःख लहै नहिं चैना॥
निकसे दांत जाइ दुखदइया।
जबसों जन्म सदा दुखपइया॥ ७३॥

दोहा।

दुख सुख भर बढने लगा, पांचबर्ष भई देह।
जब पढने बठाइयां, अपनी विद्या लेह॥ ७४॥

चौ०—बालकका चित खेल मंझारै।
ज्यों २ पाधा छडियन मारै॥
बैठिरहै तो पकरि बलावै।
बाँधि बाँधि दुखदेत पढावै॥
मनहीमन सोचे दुखभारी।
दुर्जन भए बाप महतारी॥
दुख देदेकर बहुत पढाया।

खोटकमध्ये घना सधाया ॥
ऐसे भया वर्ष द्वादशका ।
रहा नहीं उनहूंके वशका ॥
मनमें आवै सो पुनि करई ।
मात पितासूं नेक न डरई ॥
खैलै खेल बहुत परकारा ।
सबही विधि लडका मनहारा ॥
बालापन हँसि खेल गँवाया ।
गुरुकी टहलशरण नहिं आया ॥
पाप पुण्यको नहिं पहँचाना ।
सहजो कर्ता राम न जाना ॥ ७

दोहा ।

तरुणापा फिर आइयां, पांचभूत लै सं
यौवन मदमातोरहै, पियै विषयको रंग ॥

चौ०–तरुणा पा भया सकल शरीरा ।
अंधा भया बिसरि हरि हीरा ॥

विषय वासनाके मदमातो ।
अहू आपदाके रंगरातो ॥
मूछ मरोर अकडता डोलै ।
काहूते मुख मीठ न बोलै ॥
कहैं बराबर मेरी नाहीं ।
बुद्धिमान कोइ या जगमाहीं ॥
मैं बलवंत सबन पर भारी ।
द्रव्य कमाऊं नरन अगारी ॥
महादुखी सुख मानि लियोहै ।
मोह अमल अज्ञान पियोहै ॥
भया कुटुम्बी जब सुखकैसा ।
सहजो बंध पडे कोइ जैसा ॥
सुत पुत्री उपजें मरजावें ।
सोच सोच तन मन दुखपावें ॥ ७७ ॥

दोहा ।

द्रव्यहीन भटकत फिरै, ज्यों सरायँको श्वान ।
झिडक दियो जिहि घरगये, सहजोरह्यो न मान ७८

चौ०–द्रव्यहीन सबको मुख जोहै ।
जात वर्ण देखे नहिं कोहै ॥
निठुर २ बंदर ज्यों नाचै ।
राम तजो इन बातन राचै ॥
बेटी व्याहयोग घरमाहीं ।
औ भूखे सब कितसों खाहीं ॥
कहै हवेली एक बनाऊँ ।
अपने कुलमें इज्जत पाऊँ ॥
कलपै बहुतशीश धुनिमाथा ।
सहजो दुखी कुटुंबके साथा ॥
आवै ना सत्संगति माहीं ।
कुटुंब जाल छुटकारा नाहीं ॥
हरिकी भक्ति नहीं लवलाई ।
दारा सुत धनकी गुमराई ॥
दुख धंधाकरि जन रँगवाया ।
सहज २ बूढापन छाया ॥७९॥

दोहा।

सहजो घोरे आइयां छडवा लागेदांत।
तनुगुझलट पडनेलगी, सूखन लागीआंत ॥८०॥

चौ०—डबडबाय आंखिनमें पानी।
बूढे तनुकी यही निशानी॥
नैननमें जल भर भर आवे।
दांत हलैं दारुण दुख पावे॥
गोडे थके दरद बाईका।
कफ खांसी हिये दुख बाहीका॥
खोंखों करै नींद नहिं आवै।
आप जगै और लोग जगावै॥
बेवशइन्द्रिय शिथिल भई हैं।
अब क्या जीतै सहज गई हैं॥
पूत बहू लखि नाक चढावैं।
बहुत पुकारे निकट न जावैं॥
निहुरि चले लकडीले हाथा।
सजन कुटुंब नहिं दुखको साथा॥

असीवर्ष लगि बीतें साठी ।
सहजो कहै वहँक बुधि नाठी ॥ ८१ ॥

दोहा ।

असी वर्ष ऊपर लगी, वृद्ध अवस्था होय ।
आगेकी थिरती नहीं, पिछली सबगई खोय॥८२
तीन अवस्था बीतिकरि, चौथी आई मन्द ।
वृद्ध अवस्था शिरचढी, तऊ न चेता मन्द ॥८३

चौ०—लागी वृद्ध अवस्था चौथी ।
सहजो आगे मौतहि मौती ॥
हाथ पैर शिर कांपन लागे ।
नैन भये बिन ज्योति अभागे ॥
श्रवणनते कुछ सुनियत नाहीं ।
दांतजाड नहिं मुखके माहीं ॥
कंठ रुके कफ बाई घेरै ।
हाड २ सब दुखमें पेरै ॥

बात कहै घर बाहर हांसो ।
कुटुंब दियो मिल पौलीबासो ॥
मन चालै सब रसकूं तरशै ।
नरनारी कोउ हितू न दरशै ॥
आप आपको इत उत डोलै ।
बिन पौरुष कोउ मुखहुनबोलै ॥
जिनकारण पचिया दिनराती ।
प्यार करै नहिं कुटुंब सँघाती ॥
सुन पोते दुर्गंध घिनावै ।
टहल करै जब नाक चढावै ॥
तिनके मोह तजे जगदीशा ।
अब मनमें कलपै धुनिशीशा ॥
चरणदास गुरु कही विशेषी ।
हरिबिन योंही जाते देखी ॥ ८४ ॥

दोहा ।

पीतरोम सब होगये, सूखि गई सब देह ।

सहजो वह मुखना रहा, उड़ने लागी खेह ॥८५
सहजो इन्द्रिय सब थकीं, तनु पौरुष भये छीन
आशा तृष्णा ना घटी, सहज वचन भये दीन८
चार अवस्था खोदई, लियो न हरिको नाम
तनुछूटे यम कूट हैं, मापी यमके गांव ॥ ८७
आय जगतमें क्या किया, तनु पाला कै पेट
सहजो दिन धंदे गया, रैनगई सुखलेट ॥ ८८
सहजो मृतक आइया, लेटा पाँव पसार ।
नैनफटे नारीछुटी, सोहीं रहा निहार ॥ ८९
चौ०–पित सरका बाई घर आया ।
वाय सरक कफ ठौर बसाया ॥
कफ सरका गलरोंकलियाहै ।
कंठरुके कोइ नाहिं जिआहै ॥
घुटर २ जब करने लागा ।
चेतनता सब तनुका भागा ॥
नाते घिर २ सबही आये ।

थोथे अपने नेह जनाये ॥
आंखिनमें जल भर भर लावें ।
आपसमें सब नेह दिखावें ॥
हाय हाय कोई करि बोले ।
कोई ढूंढत औषध डोले ॥
कोई कहै कछुद्रव्य बताओ ।
धरा ढका कछु कर्ज बताओ ॥
बाको सुधि नहिं अपने तनकी ।
यम किंकर मारतहैं घनकी ॥ ९० ॥

दोहा ।

यमकी सूरत देखिकर, सुधि बुद्धि गई नशाय ।
सहजो जो संकट बन्यो,मुखसों कहो नजाय॥९१॥
सहजो मृतके समैमें, पीडा होय अपार ।
बीछू एक हजार ज्यों, डंकलगैं इकसार ॥ ९२ ॥
चौ०—कोइकहै भजु रामहि रामा ।
सहजो कहै कौन अब कामा ॥

आगेसे हरि सुमिरे नाहीं ।
पचि पचि मुआ कुटुंबके माहीं ॥
हिरदे रखता राम सँघाती ।
तौ रक्षा अब सब बनि आती ॥
आगेसे अभ्यास जु रहता ।
तो अब मुखसौ हरि हरि कहता ॥
तनुकी पीडा सब मिटिजाती ।
यमकी तोपै कहा बसाती ॥
रामनाम तू मरतौ कहता ।
जो आगेसे कहता रहता ॥
तैं मनदिया कुटुंबके साथा ।
हो बैठा घर बाहर नाथा ॥
अपना किया भुगतरे जीया ।
जो गुरु पूरा ढूंढ न कीया ॥ ९३

दोहा ।

पकड बांध यम लेचले, धर्मरायके पास ।

कईवार आगे गये, छप्पन जहां निरास ॥९४॥
कई भांतिके दंडहैं, सहजो नाना त्रास ।
नरककुंड दुःखभुगतिकर, फिर चौरासीवास॥९५॥
अकालमृत्यु अब कहतहूं, चौंकि उठै अज्ञान ।
समझेगा कोइ साधुजन, कैकोइ विद्यावान ॥९६॥
जगत विषयकी वासना, हरिसों नाहीं हेत ।
अकालमृत्यु कोई मरै, निहचै होय परेत ॥९७॥
चारिपहरका तेलभरि, राखै दीवाबाल ।
तेलनिबड बाती बुझै, सहजो पूरा काल ॥९८॥
कै मनुष्य कै बायुसूं, कै पतंग करदेय ।
तेल रहै लोई बुझै, अकाल मृत्यु है येह ॥९९॥
चौ० -बूढा बालक कैहो तरुणा ।
अकालमृत्यु एक कालहि मरना ॥
अकाल मृत्यु जो आगे गाई ।
अकालमृत्यु कहै सहजो बाई ॥
शस्तर मौतमरै जो कोई ।

यहभी मौत अकालहि होई ॥
बिगडै रोग पक्ष नहिं कीन्हों ।
यहभी मौत अकालहि चीन्हों ॥
कोइ भाँति जो विष खा मरे ।
और जिवत पावकमें जरे ॥
जलमें डूबजाय कोइ कैसे ।
लागै प्रेत मरै कोइ ऐसे ॥
सांप डसै छूटै जो काया ।
महलायत नीचे दबिजाया ॥
कोउ ठग फांसीदै मारै ।
जंगल पशू तोड जो डारै ॥
ये सब मृत्यु अकाल दिखाई ।
मुयेसूं योनि पिशाचकि पाई ॥ १०० ॥

दोहा ।

प्रेतयोनिको पायकै, दुखीभये अज्ञान ।
आपदुखी दुखदेतहैं, उठगई सब पहँचान ॥ १०१ ॥

चौ०—पेट बडा मुख सुई समाना।
भूखप्यासमें फिरै दिवाना॥
भटकत फिरै ठौर नहिं पावै।
लगता फिरै जूतियां खावै॥
वासा लहै कुचील ठिकाना।
आप कुचील कुचीलहि बाना॥
पाप करै हरिको बिसरावै।
सहजो कहैं सो यह गति पावै॥१०२॥

दोहा।

रही सो आयुर्दा कटै, मृत्युलोकके माहिं।
जबहीं पूरी हो चुकै, बांधे नरकै जाहिं॥१०३॥
अतिकुचील वह ठौरहै, महाघोर भयमान।
त्राहि२ पापीकरै, सुनै न कानोकान॥ १०४॥

चौ०—बहुतक घोर नरकमें पडे।
बहुतक थंभन बांधे खडे॥

बहुतनके शिर आरे धरिये ।
बहुतक पापी गुरु ज्यों घडिये॥
बहुतोंके मुख सांप लगाये ।
बहुतक पापी अग्नि तपाये ॥
बहुतोंका शिर नीचा किया ।
ऊपर पांव बांध जो दिया ॥
तले कढाई तेल जलाया ।
भर भर कलछे छौंक लगाया॥
बहुतन पकड कुंडमें डारे ।
जिन शिर कागा चोंचन मारे॥
कहँलग कहूँ त्रास बहुतेरे ।
छप्पन त्रास कहे गुरु मेरे ॥
यमप्रेरित है सकल मँझारी ।
सबही भुगते नर का नारी ॥
फिर फिर मूण्डी जाय कुटावें।
सहजो कहै नहीं सकुचावें ॥ १०८ ॥

दोहा।

यमका लिङ्ग शरीरहै, पापी लिङ्ग शरीर।
जैसेको तैसा गहै, वैसी वाको पीर ॥ १०६ ॥
त्रासदहन यमके कहे, सुनि भजियो नर नारि।
अब चौराशी कहतहूँ, भिन्न २ विस्तारि ॥१०७॥

चौ०--नौलख जलके जीव बताये।
बहुत जन्म इनमें भुगताये ॥
पक्षीजात कही दश लाखा।
आगेसे चलि आई शाखा ॥
ग्यारहलाख कृमि कीट लखाऊँ।
जिमींमाहिं जो चलत दिखाऊँ॥
बीश लाख थावर विस्तारा।
भर्मत भर्मत हो पचिहारा ॥
तीश लाख पशु योनि सुनाया।
घनी वारसूं पहरी काया ॥
चारहु लाख मनुष्या देही।

लख चौराशी यह सुनिलेही ॥
एक एक वार सब तुम भये।
कहिये कहां बहुत दुखसहे ॥
दुःख खेखे करि यह तनुपायो।
सहजो हरि गुरु बिना गंवायो ॥
चरणदास गुरु पूरे पाए।
चौरासी यमदंड छुडाये ॥ १०८ ॥

इति वैराग्य उपजावनेका अंगवर्णन सम्पूर्ण।

अथ नामवर्णका अंगवर्णन।

दोहा।

लखचौराशी यह कही, फेरि फेरि भुगतंत।
जन्म मरण छूटै नहीं, बिना शरण भगवंत ॥१
यज्ञ दान तीरथ करो, पूजा भांति अनेक।
मुक्ति न पावै सहजिया, बिना भक्ति हरि एक ॥२
इंदरकी पदवी मिलै, अरु ब्रह्माकी आव।

आगे तो भी मरण है, सहजो सकल बहाव ॥३॥
राम नामले सहजिया, दीजे सर्व अकोर ।
तीनलोकके राजलो, आजाऊँगे ठौर ॥ ४ ॥
भक्ति बिना थोथे सभी, योग यज्ञ आचार ।
राम नाम हिरदे धरो, सहजो यही विचार ॥५॥
यह औसर दुर्लभ मिलै, अचरज मनसा देह ।
लाभ यही सहजो कहै, हरिसुमिरन करिलेह॥६॥
एक घडीका मोलना, दिनका कहा बखान ।
सहजोताहि न खोइये, बिना भजन भगवान्॥७॥
पारसनाव अमोल है, धनवंते घर होय ।
परख नहीं कंगालको, सहजो डारै खोय ॥८॥
सहजो जा घट नाव है, सोघट मंगलरूप ।
नाव विना धिक्कार है, सुन्दर धनवंत भूप ॥९॥
सहजो नवका पारहै, गहई उतरो पार ।
राम सुमिर जानो नहीं, ते डूबे मँझधार ॥१०॥
सहजो भवसागर बहै, तिमिर वर्ष घनघोर ।

नामें नाव जहाजहै, पार उतारै तीर ॥ ११ ॥
पावक नाम जलाय है, पाप ताप दुख द्वन्द ।
राम सुमिरि सहजो कहै, जो बिसरे सो अंध॥१२॥
कनकदान गजदान दे, उनंचास (४९)भूदान
निहचै करि सहजो कहै, नाहरि नाम समान॥१३॥
मेहसहैं सहजो कहै, सहै शीत अरु घाम ।
पर्वत बैठो तपकरै, तौभी अधिकी नाम ॥१४॥
चरणदास हरि नामकी, महिमा कही अपार ।
सो सहजो हिरदै धरी, अचल धारणाधार ॥१५॥
सहजो सुमिरण कीजिये, हिरदे माहिं दुराय ।
ओठ ओठ सूना मिलै, सकै नहीं कोउ पाय॥१६॥
राम नाम यों लीजिये, जाने सुमिरन हार ।
सहजो के करतार ही, जाने ना संसार ॥ १७ ॥
बैठे लेटे चालते, खान पान व्यवहार ।
जहां तहां सुमिरणकरै, सहजो हिये निहार॥१८॥
जाग्रतमें सुमिरण करै, सोवतमें लवलाय ।

सहजो इकरसही रहै, तार टूटि ना जाय ॥१९॥
आठ पहर सुमिरण करै, बिसरै ना क्षण एक ।
अष्टादश अरु चारमें, सहजो यही विशेष॥२०॥
सहजो सुमिरण सब करैं, सुमिरण माहिं विशेक।
सुमिरण कोई जानिहै, कोटिन मध्ये एक ॥२१॥
जन्म मरण बन्धनके, टूटे यमकी फांस ।
राम नामले सहजिया, होय नहीं जग हांस॥२२॥
चौराशीके दुख छुटे, छप्पन नरकतिरास ।
राम नामले सहजिया, यमपुर मिले न वास॥२३॥
गर्भवास संकटमिटे, जठर अग्निको आंच ।
रामनामले सहजिया, मुखसूं बोलो सांच॥२४॥
शील क्षमा सन्तोष गह, पांचों इन्द्रिय जीत ।
राम नामले सहजिया, मुक्त होनकी रीत ॥२५॥
काम क्रोध मोह लोभमद, तज भजि हरिकोनाम।
निहचै सहजो मुक्तहो, लहैं अमरपुर धाम॥२६॥
काम क्रोध मोह लोभ तजु, ले सुमिरे हरिनाम।

मुक्ति न पावे सहजिया, ना रीझेंगे राम ॥२७॥
कामी मति भृष्टलसदा, चलै चाल विपरीति ।
शील नहीं सहजो कहै, नैनन माँहि अनीति॥२८॥
सदा रहै चित भंगही, हिरदै थिरता नाँहि ।
राम नामके फलजिते,काम लहर बहि जाँहि२९॥
सहजो क्रोधी अतिबुरो, उलटी समझे बात ।
सबहीसों ऐंठो रहै, करै वचनकी घात ॥ ३० ॥
कूकर ज्यों भूसत रहै, तामस मिलवा बोल ।
घर बाहर दुख रूपहै, बुध रहै डांवाडोल॥३१॥
मन मैला तनु क्षीणहोय, हरिसों लगै न नेह ।
दुखी रहै सहजो कहैं, मोह बसै जा देह ॥३२॥
मोहमिरग काया बसै, कैसे उबरैं खेत ।
जो बोवैं सोई चरैं, लगै न हरिसों हेत ॥३३॥
नीच लोभ जातनु बसैं, झूठ कपटसूँ काम ।
बौंरायो चहुँदिशफिरै, सहजो कारणदाम॥३४॥
द्रव्यहेतु हरिको भजै, धनही की परतीति ।

स्वारथले सबसों मिलै, अंतरकी नहीं प्रीति॥३५॥
अभिमानी मुख धूलहैं, चहैं बड़ाई आप।
डिंभलिये फूलो फिरैं, करतो डरै न पाप ॥३६॥
प्रभुताईको चहत हैं, प्रभुको चहैं न कोय।
अभिमानी घटनीच है, सहजो ऊंच न होय॥३७॥

इति नामका अंगवर्णन सम्पूर्ण।

अथ नान्हा महाउत्तमका अंग प्रारम्भ।

दोहा।

धनछोटा पन सुखमहा, दिरघ बडाई ख्वार।
सहजो नान्हा हूजिये, गुरुके वचन सम्हार ॥१॥
सहजो तारै सब सुखी, गहैं चन्द्र अरु सूर।
साधू चाहैं दीनता, चहै बडाई कूर॥ २॥
अभिमानी नाहरबड़ो, भ्रमत फिरत उज्जार।
सहजो नन्हीं बाकरी, प्यार करै संसार ॥ ३ ॥

शीश कानमुख नासिका, ऊंचे ऊंचे नाँव ।
सहजो नान्हा कारने, सबकोइ पूजे पाँव ॥ ४ ॥
नान्ही चींटी भवनमें, जहां तहां रसलेह ।
सहजो कुंजर अतिबडो, शिरमें डारे खेह ॥५॥
सहजो दोयज चांदका, दरशकरै सबकोय ।
नान्हेंसो दिन दिन बढैं, अधिकी चांदन होय॥६॥
बडाभये आदर नहीं, सहजो आंखन देख ।
कला सभी घटजायगी, कछू न रहसी रेख॥७॥
सहजो नान्हा बालका, महल भूपके जाय ।
नारीपर्दा ना करै, गोदहि गोद खिलाय ॥८॥
बडा न जाने पाय हैं, साहबके दरबार ।
द्वारेहीसूं लागिहै, सहजो मोटी मार ॥ ९ ॥
बाले दीये चांदना, बडा भये अँधियार ।
सहजो तृण हलका तिरे, डूबे पत्थर भार ॥१०॥
भली गरीबिनि वीनती, सकै नहीं कोइ मार ।
सहजो रुई कपासको, काटै ना तरवार ॥११॥

चरणदास सतगुरु कही, सहजोको यह चाल ।
सकैतो छोटाहूजिये, छूटे सब जंजाल ॥ १२ ॥
साहनको तो भय घना, सहजो निर्भय रंक ।
कुंजरके पग बेडियां, चीटीं फिरै निशंक ॥१३॥
ऊंचे उज्ज्वल भाग्यसूं, आयमिले गुरुदेव ।
प्रेम दिया नान्हा किया, पूरण पायो भेव॥१४॥
सहजो पूरण भाग्यसूं, पापलिये सुखदान ।
नखशिष आई दीनता, भजे बडाई मान ॥१५॥
सहजो पूरणभाग्यसूं, पापलिये सुखदैन ।
गये कुलक्षण देहसूं, लक्षण पायो चैन ॥१६॥
अवगुणथे सो सबगये, राज्यकरैं उनतीस ।
प्रेमझिला प्रीतममिला, सहजो वारासीस ॥१७॥
ऊंचे पदको चहतहैं, सबकोई जियमाहिं ।
उन्नत पद तबहीं मिलै, जब नमता हियमाहिं १८॥

इति नान्हा महाउत्तमका अंग संम्पूर्ण ।

अथ प्रेम अंगवर्णन ।

दोहा ।

चरणदास सतगुरु दिया, प्रेमपियाला छान ।
सहजो मतवारे भये, तुरिया तत गलतान ॥१॥
प्रेमदिवाने जो भये, मनभयो चकना चूर ।
छकेरहे घूमत रहैं, सहजो देखि हजूर ॥ २ ॥
प्रेमदिवाने जो भये, प्रीतमके रंगमाहिं ।
सहजो सुधबुधि सबगई, तनुकी शोधी नाहिं॥३॥
प्रेमदिवाने जो भये, कहै वह कहते वैन ।
सहजो मुख हाँसी छुटै, कबहूँ टपकै नैन ॥४॥
प्रेमदिवाने जो भये, पलट गयो सबरूप ।
सहजो दृष्टि न आवई, कहाँ रंककहाँ भूप ॥५॥
प्रेमदिवाने जो भये; जातवर्ण गइ छूटि ।
सहजो जग बौरा कहैं, लोग गये सब फूटि॥६॥
प्रेमदिवाने जो भये, नेमधर्म गयो खोय ।
सहजो नर नारी हँसें. वामन आनँद होय ॥७॥

प्रेमदिवाने जो भए, सहजो डगमग देह ।
पांव परे कितके किती,हरि सम्हारि जब लेहिं॥८॥
कबहूं हकधक होरहै, उठे प्रेम हितगाय ।
सहजो आँखमुंदी रहै, कबहूं शुध होजाय ॥९॥
मनमें तो आनंद है, तनु बौरा सब अंग ।
ना काहूके संग है, सहजो ना कोइ संग ॥१०॥
प्रेम लटक दुर्लभ महा, पावै गुरुके ध्यान ।
अजपासुमिरण कहतहूं, उपजै केवलज्ञान ॥११॥

इति प्रेमका अंगवर्णन संपूर्ण ।

अथ अजपा गायत्री विधि ।

दोहा ।

ऐसा सुमिरण कीजिये, सहज रहै लवलाय ।
विनजिभ्या विन तालुवें, अंतर सुरत लगाय ॥ १ ॥
हंसा सोहं तारकरि, सुरति मकरिया पोय ।
उतरि २ फिर २ चढै, सहजो सुमिरण होय ॥ २ ॥

वरत बांधि करि घरनमें, कला गगनमें खाय ।
अधऊरध नट ज्यों फिरै, सहजो राम रिझाय॥३॥
लगै शुंन्नमें टकटकी, आसन पद्म लगाय ।
नाभि नासिका माहिंकर, सहजो रहै समाय ॥४॥
सहज श्वास तीरथ बहै, सहजो जो कोइ न्हाय ।
पाप पुण्य दोनों छुटैं, हरिपद पहुँचै जाय ॥५॥
हक्कारे उठ नामसूं, सक्कारे हो लीन ।
सहजो अजपा जाप यह, चरणदास कहदीन॥६॥
सबघट अजपा जापहै, हंसा सोहं परख ।
सुरतहिये ठहरायकै, सहजो इहिविधिनिरख॥७॥
सब घट व्यापक रामहैं, देही नाना वेष ।
राव रंक चंडालघर, सहजो दीपक एक ॥८॥

श्लोक ।

हकारः सूर्यसंकाशतेजास्संगच्छते बहिः ।
सकारस्तादृशो देवि प्रविशेद्ध्यानमीरितम् ॥९॥
हंसोगणेशोविधिरेवहंसोहंसोहरिर्हंसमयश्चशंभुः ।

हंसोहजीवःपरमात्महंसोहंसोयमात्मागुरुदेवहंसः॥
हकारःशिवरूपेण सकारश्शक्तिरुच्यते ॥
हंसहंसेति यो ब्रूयाज्जीवो जपति सर्वदा ॥ ११ ॥
गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्दीपदीपंतिमिरांध-
कारम् ॥ पश्यामि ते सर्वनभोन्तरस्थं नमामि हंसं
परमात्मरूपम् ॥१२॥

इति अजपा अंगवर्णन संपूर्ण।

सोलह तिथि वर्णन।

दोहा।

प्रणाम करूं शुकदेवजी, तुमपर वारूं प्राण।
सोलहतिथि अब कहतहूं, इनका दीजैज्ञान ॥१॥
चरणदासके चरणको, निशिदिन राखों ध्यान।
ज्ञानभक्ति अरु योगकी, तिथि मैं करूं बखान॥२॥

कुंडलिया—अमावस।

ममा ररादो अंकको, राखो हिरदे माहिं।

धर्मराय याचै नहीं, लेखा मांगे नाहिं ॥
लेखा मांगै नाहिं, जाय नहिं यमपुरबाधा ।
ऐसे निर्मल नामको, जो बिसरै सो आंधा ॥
टीका चारों वेदकी, महिमा कही न जाय ॥
औसर बीतो जातहै, सहजो सुमिर अघाय ॥३॥

पड़िवा ।

पानीकासा बुलबुला, यह तनु ऐसा होय ।
पीव मिलनकी ठानिये, रहिये ना पडि सोय ॥
रहिये ना पडि सोय, बहुरि नहिं मनसादेही ।
आप नहीं को खोजि मिलैं, जब राम सनेही ॥
हरिको भूले जो फिरैं, सहजो जीवन छार ।
सुखिया जबहीं होयगा, सुमिरेगा करतार ॥ ४ ॥

दोयज ।

धंधा धंधा जगतका, लाग रहे दिनरैनि ।
कुटुंब महादुख देत है, कैसे पावै चैन ॥
कैसे पावै, चैन बिना साधोंकी संगत ।

दुनिया रंग पतंग, मजीठी गुरुकी रंगत ॥
जन्म मरण तासों छुटे, सहजो दरशै राम ।
चौराशीके दुखमिटैं, पावे निजपुर धाम ॥ ६ ॥

अथ सतवैराग्य जगतमिथ्याका अंगवर्णन ।

दोहा ।

आतममें जागतनहीं स्वप्ने सोवत लोग ।
सहजो स्वप्ने होतहै, रोग भोग अरु योग ॥१॥
कोटिवर्ष इकक्षणलगै, ज्ञानदृष्टि जो होय ।
विसरि जगत इक अरुबने, सहजो स्वप्ने सोय ॥२॥
ऐसेही सब स्वप्न है, स्वर्ग मृत्यु पाताल ।
तीनलोक छलरूप है, सहजो इन्दर जाल ॥३॥

सच्चिदानंदका अंग वर्णन ।

दोहा ।

नया पुराना होयना, घुन नहिं लागै जासु ।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिं व्यापै तासु ॥१॥

फिरै घटै छीजै नहीं, जाहि न भिजवै नीर ।
ना काहूके आसरे, ना काहूके सीर ॥ २ ॥
रूप वर्ण वाके नहीं, सहजो रंग न देह ।
मित्र इष्ट वाके नहीं, जात पांत नहिं गेह ॥ ३ ॥
सहजो उपजै ना मरै, सदवासी नहिं होय ।
रागद्वेष तामें नहीं, शीत उष्ण नहिं सोय ॥४॥
आग जलाय सकै नहीं, शस्तर सकै न काटि ॥
धूप सुखायसकै नहीं, पवन सकै नहिं डांटि ॥५॥
गीतामें श्रीकृष्णने, वचन कहे सब खोल ।
सब जीवनमें मैं बसूं, के चर कहा अडोल ॥६॥
धन्य यशोदा नंद धन, धन ब्रजमंडलदेश ।
आदि निरंजन सहजिया, नयो ग्वालके भेस॥७॥
चौ०—निर्विकार निर्भय निरवाना ।
कारणसंत धरै तनु नाना ॥
निर्गुण सरगुण रूपो देई ।
आदि अंतमधि एकहि होई ॥

गूंगेको स्वप्नो यह बाता।
सहजो कहैं कौनके साथा ॥८॥

दोहा।

निर्गुण सर्गुण एकप्रभु, देखा समझे विचार।
सतगुरुने आज्ञादई, निहचै किया निहार ॥९॥
सहजो हरि बहुरंगहैं, कहीं प्रगट कहिं गुप्त।
जल पालेमें भेदना, ज्यों सूरज और धूप ॥१०॥
चरणदास गुरुकी दया, गया सकल संदेह।
छूटे वाद विवाद सब, भई सहजगत लेह॥११॥
गुरु विन मारग ना मिलै, गुरु विन लहै न ज्ञान।
गुरु विन सहजो धुंधहै, गुरुविन पूरी हान॥१२॥
सतगुरुविन भरमें फिरै, भरमत पाँवरनीर।
सहजो कैसे मिटतहै, यम जालिमकी पीर॥१३॥
पुजै नवग्रह देवता, पित्रशक्ती ऊत।
सहजो कैसे सुलभहै, होइहो सूत कसूत ॥१४॥
गुरुको जानत है नहीं, बनिता सुतके मोह।

साधुनकी निन्दा करे, हरिसों राखै द्रोह ॥१५॥
अनन्यभक्ति उपजै नहीं, गुरुसों नाहीं सीर ।
सहजोमिलै न सिद्धको, ज्यों तलावको नीर॥१६॥
जनक विदेही परमगुरु, दादा गुरु शुकदेव ।
सहजोंकी दण्डवतहै, चरणदास गुरुभेव ॥१७॥

छप्पय ।

हरिप्रसादकी सुता, नाम सहजो है बाई ।
दूसर कुलमें जन्म, सदा गुरु चरण सहाई ॥
चरणदास गुरुदेव, भेव मोहिं अगम बतायो ।
योग युक्तिसूं दुर्लभ, सुलभ करिदीप दिखायो ॥
और सब साधुनपरणामकरि, करजोहूंशिरनाइकै ।
यहो दानमोहिंदीजिये, भक्तिकरूंचितलाइकै॥१८॥

दोहा ।

फागुन महिना अष्टमी, शुक्लपक्ष बुधवार ।
संवत अठारैसै हुता, सहजो किया विचार ॥१९॥
गुरुस्तुतिके करनको, बाढो अधिक हुलास ।

होते होते ह्वैगई, पोथी सहजप्रकाश ॥ २० ॥
दिल्लीशहरसुहावना, परीक्षितपुरमें वास ।
तहां समापतिही भई, नवका सहज प्रकास॥२१॥
सहज प्रकाश पोथी कही, चरणदास परताप ।
पढो सुनो जो प्रीतिसों, भाजे सबही पाप॥२२॥

कुण्डलिया।

तीज तनक सुखकारते, बहुत फँसायो जीव ।
लालच लागे यो गिरे, जैसे माखी घीव ॥
जैसे माखी घीव, डूबकरि निकसे नाहीं ।
ऐसे यह नर बूड़, रह्यो कुनवेके माहीं ॥
मानसदेही पाइके, सहजो डारी खोय ।
यमपुर बांधे लेचले, चौराशी दुखहोय ॥ १ ॥
चौथ चहूँदिशि तिमिरहैं, महाघोर भयमान ।
मूरखनर सोवत तहां, मदमातो अज्ञान ॥
मदमातो अज्ञान, सत्यको जानत नाहीं ।

वन वन ढूंढत फिरत, राम अपनेही माहीं ॥
ज्यों मेहदीमें रंग है, लकडी मध्यहुतास ।
सहजो काया खोजले, काहे रहत उदास ॥ २ ॥
पांचों इंद्रिय वश करो, मनजीतनकी वान ।
पवनरोकि अनहदलगो, पावो पद निरवान ॥
पावो पद निरवान, करो तुम ऐसी करनी ।
आसन संयम साध, संसृति भीतिहरनी ॥
छोडो मत पाखण्ड, गहो तुम मारग सांचो ।
मनमलीनको रोक, करो वश इंद्रिय पांचो ॥३॥
दशउ दिशा भरिपूर हैं, तामें एक सब पिंड ।
जो सरवरमें बुदबुदे, ब्रह्मबीच ब्रह्मंड ॥
ब्रह्मबीच ब्रह्मंड, तिसीको वार न पारा ।
ऐसा नक अगाध, नेत कहि निगम पुकारा ॥
चरणदास कहै सहजिया, गुरुसों लेवो ज्ञान ।
नैनाहोय अनंतही, जब यह पावै जान ॥ ४ ॥
या संगति जो चहतहो, तजो जगत्की आश ।

कलह कल्पना छोडिकर, अन्त समै करिवास ॥
अंतसमै करिवास, खैंचि इंद्रिय दश लावै ॥
मनस्थिर जब होइ, सुरति औरनिरत मिलावे ॥
ध्याता ध्याके ध्यानमें, ध्यान धेयके माहिं ।
जनम मरणमिटि सहजिया, उपजे विनशेनाहिं९॥
द्वादश दावा दूरिकरि, दावेहीमें देह ।
राग द्वेष अरु आपदा, भयो जातहै खेह ।
भयो जात है खेह, बहुरि लाहा कब लैहौ ।
बेगहि समझ सँभार, तहां बहुतै पछितैहौ ॥
आगा पीछा क्याकरै, सकल वासना त्याग ।
चरणदास कहै सहजिया, हरि सुमरणकोलाग६॥
सुकृतशर आदेशका, लगा कलेजे माहिं ।
मन न लेवे एक पल, या दुनियांके माहिं ॥
या दुनियाके माहिं, सदा चक्कर में डोलै ।
आवागमन दुखमहा, तासुकी गांठ न खोलै ॥
ऐसे मूरख बावरे, भोंदू मुग्ध गँवार ।

चरणदास कहै सहजिया, भरमें वारंवार ॥७॥
थावर थिरकती रहै, और सकल मिटिजाय ।
जाते सुमति प्रीति करि, रहते चित्तलगाय ॥
रहते चित्त लगाय, तासुने जग उपजाया ।
वाकी शरणे आय करै, बहु विधिकी छाया ॥
ऐसा हरिका नाम है, जन्ममरण मिटिजाय ।
चरणदास कहै सहजिया, सांचेसूं लवलाय॥८॥
अंत जु आए जगत्में, हरि सुमिरणके काज ।
ह्यां कछुकीया औरही, नेक न आई लाज ॥
नेक न आई लाज, साज सब खोटे कीन्है ।
सदा रहे अज्ञान, रामघटमें नहिं चीन्है ॥
जैहौ जन्म गँवाइके, पछितावा रहिजाय ।
चरणदास कहे सहिजिया, कहा कियो तनुपाय९॥
सोम श्रीपति सेइये, गुरुकी आयसुलै ।
सत्संगति अचरज कथा, ताहीमें चितदै ॥
ताहीमें चितदेय, और ऊँचा नहिं याते ।

और सकल धर्म डरैं, सभी थोथी हैं बाते ॥
चरणदास कहे सहजिया, भक्ति शिरोमणिजान।
तन धन चित बुध प्राणको, तामें दीजेआन ॥१०॥

दोहा।

सात बार ये मैं कहे, यामें हरिका भेद।
जोकोइ समझै प्रीतिसूं, छूटै सबही खेद ॥१॥
सात बारन बीचमें, जग उपजै मिटिजाय।
सहजो बाई हरि जपौ, आवागमन नशाय॥२॥

इति श्रीस्वामी चरणदासजीकीबहन सहजो-
बाईजीकृत सात वार संपूर्ण।

अथ सहजोबाईजीकृत शब्द प्रारम्भ ।

राग गौरी ।

नमो नमो गुरु तुम शरना । तुम्हरै ध्यान भर्म भय भागे जीते पांचौ और मना ॥ दुख दारिद्र मिटै तुम नाऊं कर्मकटै जो होहिं घना । लोक परलोक सकलविधि सुधरैं पगलागे आय ज्ञान-गुना । चरणछुए सबगति मति पलटै पारस जैसे लोहसुना ।सीप परस स्वाती भयो मोती सोह-तहै श्रीराजरना ॥ ब्रह्महोय और जीव बुधि नाशै जब कैसो होवै ना मरना ॥ अमर होय अमरापद पावै यह गुण कहिये गुरुवचना । चरणदास गुरु पूरे पाये जगका दुखसुख क्यों सहना । सहजो बाई ब्याध छुटाकर आनँद मँगलमें रहना ॥१॥

राग सोरठ ।

हमरे गुरुवचनकी टेक । आनधर्मको नाहिं जानूं जपूं हरि हरिएक ॥ गुरु बिना नहिं पार उत

करौ नानाभेष। रमौ तीरथ व्रत राखौ होहु पंडित शेष ॥ गुरुबिना नहिं ज्ञान दीपक जाय ना अँधियार । कामक्रोध मद लोभ माहीं उरझिया संसार॥ चरणदास गुरुदया करके दियो मंतरकान। सहजो घट परकाश हुआ गयो सब अज्ञान ॥ २ ॥

रागमलार ।

हमारे गुरुपूरणदातारा। अभयदान दीननको दीन्हें कीन्हैं भवजलपारा ॥ जन्मजन्मके फंद निकाटे यमकी बंध निवारा । रंक हते सो राजा कीन्हें हरि धन दिये अपार। देवें ज्ञान भक्ति पुनि देवें योग बतावन हारा । तन मन वचन सकल सुख दाई हिरदे बुध उजियारा ॥ सब दुख गंजन पातक भंजन रंजत ध्यान विचारा। साजन दुर्जन जोचलि आवै एकहि दृष्टि निहारा ॥ आनँदरूप स्वरूप मई है लिप्त नहीं संसारा । चरणदास गुरु सहजो करैं नमो नमो बारम्बारा ॥ ३ ॥

रागमलार ।

ऐसे जन धनि जननी जिहि जाये। दूसरकुलमें भक्ति नहींथी जाको तारन आए॥ कारण परमारथ तनुधारो बहुतक जीव उबारे। केवटहो भवसागरमाहीं शरनलगे सो तारे॥मुक्तिस्वरूप भूप मन जीते आशा सकल जलाये। भक्तिखेतमें लोभ खहतुआ, ताको रहत नलाये॥ ज्ञान योगको सूरज प्रकटचो वाणी किरणपसारी। चारिदिशामें भयो उजियारो चौंकि उठे नरनारी॥ प्रेमझलाझल नैननमाहीं हिरदे शीतलताई। नख शिख शीतल संतोष क्षमाही वरणे सहजो बाई॥४॥

रागमलार ।

सखीरी आज धन धरती धनदेशा। धन जहँ रामे वात मँझारे हरि आय जन भेषा॥ धन भादों धनतीज सुधीहै धनदिन मंगलकारी। धन दूसर

कुलबालक जन्मो फुलत भये नरनारी ॥ धन धन माई कुबजारानी धन मुरलीधर ताता । अगले दे तब अब फल पाए तिनके सुतभयो ज्ञाता ॥ भर्मनशावन भक्तिबढावन बहुपारायण करता । सब फलदायक सब कुछ लायक अघमोचन दुख हरता ॥ अनगिन वरस बहुत चिरजीवो गुरु सुखदेव सहाई । सहजोबाई देति अशीशै पावै दरश बधाई ॥ ६ ॥

रागमलार ।

सखी री आज जनमें लीला धारी । तिमिर भजेगी भक्ति खिजेगी पारायण नरनारी॥दरशन करते आनँद उपजै नामलिये अघनाशै । चर-चामें संदेह न रहसी खुलहैं परबलगासै॥ बहुत-कजीव ठिकानो पैहै आवागमन न होई । यमके दंड दहन पावककी तिनको मूल न कोई ॥ होहैं

योगी प्रेमी ज्ञानी ब्रह्मरूप है जाई । चरण दास परमारथकारण गावै सहजो बाई ॥ ६ ॥

रागमलार ।

सखीरी आज जन्म लियो सुखदाई।दूसर कुलमें परगट हुए बाजत आनन्द बधाई ॥ भादों तीज सुदी दिन मंगल सातघडी दिन आये । संवत् सत्रहसै साठ हुते तब शुभ समयो सब पाये ॥ जैजैकार भयो मधिगाऊं मात पिता मुख देखो। जानतहो ये कौन पुरुष हैं आये हैं नरभेषो ॥ संगचलावन अगम पंथको सूरज भक्ति उदैको आप गुपाल साधु तनुधारो निहचै मो मन ऐसो ॥ गुरु सुखदेव नाम धरि दीनो चरणदास उपगारी । सहजो बाई तनमन वारे नमो नमो बलिहारी ॥ ७ ॥

काफीराग ।

नैनो लिख लेनी सांई तेरे हुजूर ॥ आगे पीछे

दहने बाएँ सकल रहा भरपूर। जिनको ज्ञान गुरूका नाहीं सो जानत हैं दूर॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत साधें पावत नाहीं कूर। स्वर्ग मृत्यु पाताल जिसीमें सोई हरिका नूर॥ चरणदास गुरु मोहि बताओ सहजो सबका मूर॥ ८॥

रागकाफी।

हरि हरि जपलेनी औसर बीतो जाय। जो दिन गये सो फिर नहिं आवें करि विचार मनलाय॥ यह जग बाजी साँच न जानो तामें मत भरमाय। कोई किसीका है नहीं बौरे नाहक लिये लगाय॥ अंतसमय कोई काम न आवें जब यमदें बौराय। चरणदास कहैं सहजो बाई सतसंगत शरणाय॥९॥

राग बिलावल।

हरि बिनु तेरो नाहिं हितू कोई या जगमाहीं।

अंतसमैं तू देखिलै कोई गहै न बाहीं ॥
एजी यमसों कहा छुटासके कोई संग न होई ।
नारीहू फट रहिगई स्वारथको रोई ॥
पुत्र कलत्तर कौनके भाई और बंधा ।
सबही ठोंकी जलाय हैं समझै नहिं अंधा ॥
महल द्रव्य ह्यांही रहै पच पच करि जोडा ।
करहा गज ठाढे रहैं चाकर अरु घोडा ॥
परकाजें बहुदुःखसहै हरि सुमिरण खोया ।
सहजो बाई जमींधरे शिरधुनिधुनिधुनि रोया १०

राग आसावरी ।

बाबा कायानगर बसावो । ज्ञान दृष्टिसों घटमें देखो सुरत निरत लव लावो ॥ पांच मार मन वश कर अपनो तीनों ताप नशावो । सत संतोष गहो दृढ सेती दुर्जन मारि भजाओ ॥ शील क्षमा धीरज को धारो अनहद बंब बजाओ । पाप

वानियां रहन न दीजे धर्म बजार लगावो॥सुवस वास होय जब नगरी वैरी रहैं न कोई।चरणदास गुरु असल पछतावो सहजो सँभलो सोई॥११॥

राग सोरठ।

भयाहरि रसपिय मतवारारे। आठपहर झूमतही बीते डार दिया सब भारा रे॥इडा पिंगला ऊपर पहुँचे सुषमण पाट उघाडा रे। पीवनलगे सुधारस जबहीं दुर्जनपडी विताडा रे॥गंगयमुन बिच आसनमारा चमक चमक चमकारा रे। भँवर गुफामें दृढ हो बैठे देखा अधिक उजारा रे॥ चित स्थिर चंचल मने थाका पांचोंका बल हारा रे। चरणदास किरपासूं सहजो भर्म कर्म हुए क्षारा रे॥ १२॥

राग वसन्त।

आई वसंत धन मेरे भाग। पांचौं गावैं एक राग॥ और पचीसौ उनके संग। सोभी भीगे

सरसरंग ॥ मतवारे भए मनसे भूप । सखी बिसर गये सब अपना रूप ॥ नगर लोग नाहीं तनु संभार । मगन भए सब बार बार ॥ कहौ न जाय उपजो अनंद । और खेल सब भये मंद ॥ तिरवेनी तट करत विहार । पीवत बैठे अमी धार ॥ जोत-बाल पूजे सुखदेव । अगम अगोचर पायो भेव॥ शीश भेट जो दीन्ही जाय । दरशन कीन्हों अति अघाय ॥ चरणदास गुरु दई सैन । सहजो बाई पायो चैन ॥ १३ ॥

राग वसंत ।

आतम पूजा अधिकी जान । सकल शिरो-मणि याहिमान ॥ विस्तारो हित भावन माहिं । भरम दृष्टि जहां होवै नाहिं ॥ हिरदा कोमल ठौर लीप । करि विचार जहिं धूपदीप ॥ या सेवाका दयामूल । सभ्यता चन्दन ़मा फूल ॥ मीठे वचन सोई बाल भोग । निंदा ठा तजि अयोग ॥ घंटा

अनहद सुरत लाव । घट घट देखे एक भाव ॥ करै सुखी सुख आपलेव।इस पूजासूं सुखी देव॥ चरणदास गुरुदई मोह ॥ हँस हँस जहां जाय होय । इन्द्रिय मनबुद्धि तहां लगाव ॥ करि सहजो बाई याको चाव ॥ १४ ॥

रागवसंत ।

ऐसो बसंत नहीं बारबार।ते पाई मनशा देही सार॥यह औसर वृथा न खोव। भक्ति बीजहिय धरती बोव॥सतसंगतिको सींच नीर। सतगुरुजीसूं करो सीर । नीकीवार विचार देव। मरन राख याको जु सेव ॥ रखवारी करि हेत हेत। जब तेरी होवे जैत जैत ॥ खोट कपट पक्षी उडाव । मोह घास सबही न लाव । सँभलै बाडी नौऊ अंग । प्रेमफूल फूले रंग ॥ पुहुप गूंडिमाला बनाव । आदि पुरुषको जा चढाव ॥ हो सहजो बाई चरणदास । तेरे मनकी पुजवे सकल आश ॥ १५ ॥

राग वसंत ।

मिलि गावौरे साधौ यह वसंत ॥ जागी अवगत सखीरी आज अनंद देवो बधाई ॥ सतगुरुने अवतार लियोहै मिलिमिलि मंगल गाई॥ अद्भुत-लीला कहा बखानूं मोपै कही न जाई ॥ बहुविधि बाजे बाजनलागे सुनत हियो हुलसाई॥ धन भादौ धन तीज सुदीहै जादिन प्रगटे आई ॥ धन धन कुबजो भाग्यतुम्हारे चरणदास सुतपाई । कलि-युगमें हरिभक्ति चलाई जनकी करे सहाई ॥ श्रीशु-कदेव करी जब किरपा गावै सहजो बाई ॥ १ ॥

राग विलावल ।

मुकुट लटक अटकी मनमाहीं॥ नृत्य नटवर मदन मनोहर कुंडल झलक अलक बिथुराही॥ नाक बलाक हलत मुकुताहल होठ मटक गत भौंह चलाई ॥ ठुमक ठुमक पगधरत धरनपर बाँह उठाह करत चतुराई । झुनक झुनक नूपर

झनकारत ताता थेई २ रिझत रिझाई ॥ चरणदास सहजो हिय अंतर भवनकरो जितरहो सदाई॥ १७॥

हरिलीला अगम पंथ ॥ जहँ नाव पदारथ है इकंग । नहिं पाइये दूजा और रंग ॥ जहँ दरशे साधो एक एक । नहिं पइये दूजा कोइ भेष॥जहँ ज्ञान ध्यानको लगो तार।जहँ आप विराजैओंकार॥ देखो सब घट व्यापक निराकार। कोई नहिं पावै यह विचार । जहां ब्रह्म अखंडित अति अनूप । जाको सुर नर मुनि योगी ध्यावें भूप ॥ जहँ छाय रहो है सर्व माहिं। कोई नहिं सन्तो खाली ठाहिं॥ गुरु चरणदास पूरण अवतारे । जिनदान दियो जग व्याधटारे ॥ सहजो बाई नावै शीश। मेरे भर्म मिटाये विश्वे बीस ॥ १८ ॥

राग धनाश्री ।

माधो मन मायाके रंग सबजग रंगरह्यो॥मूरख

पचे खेलके अंधेरे नाना स्वांग बनाय । आशा
घर घर नाचन लागे चोवा चाह लराय॥योगकै
सिधि आठौ चाहैं मान बडाइ हेत । राजवासन
भोगलोकके काशी करवट लेत ॥ पंचाग्नि बहुता-
पन लागे बहुत अरध मुख झूल। बहुनक दौड़
अडसठ तीरथ ज्ञान गली गये भूल॥ चरणदास
गुरु तत्व लखायो दीन्हे खेल छुडाय ॥ सहजो
बाई शीश नवावे बार बार बलिजाय ॥ १९ ॥

होरी -राग धनाश्री ।

मैं तो खेलूं प्रभुके सङ्ग होरी रंगभरी जित देखूँ
तित रम रह्योरे सबमें व्यापकहै हरी ॥ सब कुछ
भयो दयो सुखजनको अद्भुत लीला करी। नाना
जतन किये मिलवेके प्रीतम पाए हम घरी॥पाव-
तही सब भ्रम भय भागे आवागमन छूटीलरी ॥
जीवन्मुक्त भयो मन मेरो व्याधा सब आशा जरी।

अमरलोकपद फगुआ पाओ जन्म मरण विपता-टली ॥ चरणदासगुरु किरपा कीन्हीं सहजो सब आनंद रली ॥ २० ॥

होरी।

साधो भवसागरमें काल, होरी खेलई॥ भांति भांतिके रंग लिये कर करत जीवनकी घात। बूढ़ाबाला कछू न देखै देखै दिन नहिं रात॥ निश्चय मौत लिये संग रानी नानारंग सम्हार। बड़े बड़े अभिमानी नामी सोभी लीने मार॥ सूर चन्दवा भयते कांपे स्वर्ग माहिं सबदेव। तनुधारी सबही थरांने ज्ञानी जानत भेव॥ आपनको देही नहिं माने जाने आतम सांच। चरणदास कहै सहजो बाई ताहि न आवै आंच॥ २१॥

रागललित।

सुमिर सुमिर नर उतरो पार। भवसागरकी

तीक्ष्णधार ॥१॥ धर्म जहाज माहिं चढ़ि लीजै
संभल संभल तामें पग दीजै ॥ शुभकर्मनको सं
कीजै । हरि मारगकी लगै बयार ॥२॥ बादबा
पुनि ताहि चलावै । पापभरै तौ हाल न पावै ॥का
क्रोध लूटनको आवै । सावधान हुइ करो सम्हा
॥ ३ ॥ मानपहारी तहां अरत हैं । आशा तृष्ण
भँवर परतहैं ॥ पांच मच्छ जहँ चोट करतहैं
ज्ञान आंखि बच चलो निहार ॥४॥ ध्यान धनी
हृदय धारे । गुरु किरपासूं लगै किनारे ॥ जब ते
बोहद उतरै पार ॥ जनम मरण दुख बिपता ट
॥५॥ चौथे पदमें आनंद पावै । या जगमें तू बहु
न आवै ॥ चरणदास गुरुदेव चितावै । सहज
बाइ यही विचार ॥ ६ ॥ २२ ॥

रागललित ।

जागि जागि जो सुमिरण करै । आप तरै और

लैं तारै ॥ हरिकी भक्ति माहिं चित देवै । पद पंकज बिन और न सेवै ॥ आनधर्मको संग न लेवै । फल कामना सबै परिहरै ॥१॥ कालज्वाल सबही छुटि जावै । आवागमनकि डोर नशावै ॥ योनी संकट फेरि न आवै । बार बार जन्मैं नहिं मरै ॥२॥ ऊंची पदवी जगमें पावै । राजा रानी शीश नशावै तन छूटे या मुक्ति समावै । जोपै ध्यान धनीका धरै ॥३॥ ह्यांके सुखमूं जाने कूरा । गुरुचरणनमें लागे पूरा ॥ वेगि सँभारे योजनशूरा । चरणदास सह जो हो अरै ॥ ४ ॥ २३ ॥

रागविलावल ।

तुम गुणवंत मैं अवगुणगारी । तुम्हरी ओर खोट बहुकीन्हें पतित उधारन लालविहारी॥खान पान बोलत अरु डोलत पाप करतहै देह हमारी । कर्म विडारूं तौ नहिं छूटूं जो छूटुं तो दया तुम्हा- री ॥ मैं अधीन मायावश होकरि तुम स्वाधीन

मायासूं न्यारे । मैं अनाथ तुम नाथ गुसाँई सब
जीवनके प्राणपियारे ॥ भवसागरमें डर लागतो
मोहिं उतारो वेगहि पारी। चरणदास गुरु किरपा
सेती सहजो बाई शरणतिहारी ॥२४॥

राग यमन ।

ज्यों त्यों राम नामही तारै।जान अजान अग्नि
जो छूवै वह जौरैपै जारै॥उलटा सुलटा बीज गिरै
ज्यों धरती माहीं कैसे । उपजिरहै निश्चय करि
जानो हरि सुमिरणहैं ऐसे । वेदपुराणनमें मथि
काढा रामनाम ततसारा । तीनकांडमें अधिकी
जानो पाप जलावन हारा॥ हिरदा शुद्ध करै तनु
निर्मल ऊंचीपदवी देवै ॥ चरणदास कहै सहजो
बाई व्याधा सब हरलेवै ॥२५॥

राग रामकली ।

अब तुम हमारी ओर निहारो । हमारे अवगुण

पैमतिजावो तुमहीं अपनो विरुद सम्हारो॥युगयुग साखि तुम्हारी ऐसी वेद पुराणन गाई॥पतित उध-रन नाम तिहारो यह सुनिकै मन दृढ़ता आई॥मै अजान तुम सब कुछ जानो घर घर अन्तर्यामी॥ मैं तो चरण तुम्हारे लागी हो कृपालु दयालुही स्वामी ॥ हाथ जोरिकै अरज करत हूँ अप-नावो गहि बाहीं ॥ द्वार तिहारे आय गिरीहूं पौरुष गुण मोंमें कछु नाहीं ॥ चरणहिं दास सहजिया तेरी दरशनकी निधि पाऊं ॥ लगन लगी अरु प्राण अड़े हैं तुमको छोंडि कहो कितजाऊं ॥ २६ ॥

राग भैरों।

हम बालक तुम माय हमारी ॥ पल पल माहिं करो रखवारी निशिदिन गोदीहीमें राखो ।अन्वित वचन चितावन भाषा विषय ओर जाने ना देवो । ढुर ढुर जाऊं तो गहिलेवो ॥ मैं अजान कछुहू

नहिं जानूं ॥ बुरी भलीको ना पहिचानूं ॥ जैसी तैसी तुमहीं चीन्हों ॥ गुरुहोय ध्यान खिलौना दीन्हों ॥ तुम्हारी रक्षाहीसुं जाऊं। नाम तुम्हारो अमृत पाऊं ॥ दृष्टि तुम्हारी ऊपर मेरे ॥ सदारहूं मैं शरणै तेरे ॥ मारो झिड़कौ तौ नहिं जाऊ। सरकि सरकि तुमही पै आऊं ॥ चरण-दास सहै सहजो दासी। हो रक्षक पूरण अवि-नाशी ॥ २७ ॥

राग सोरठ।

जगमें कहा कियो तुम आय श्वानकी ज्यों पेट भरके सोयो जन्म गँवाय ॥ पहर पिछले नाहिं जागो कियो ना शुभ कर्म। आनमारग जाइ लागो लियो ना गुरुधर्म ॥ जप न कियो तप न साधो दियो ना ते दान। बहुत उरझो मोह मदमें आप काया मान ॥ देह धर है मौत कारें आन काटै तोहिं। एक क्षण रहन नहिं पावै ॥ जब कैसे

कछु होय, रैन दिन आराधना काटै जु तेरी आव ॥ चरणदास कहै सुन सहजिया अब करो भजन उपाव ॥ २८ ॥

राग कान्हरा ।

शठ तज नाव जगत सँगराचो ॥ जिहि कारण बहुस्वांग कछे हैं, चौराशी तनु धर धर नाचो ॥ गर्भ माहिं जो वचन कियेथे, एकहुबार भयो नहिं साँचो ॥ स्वारथही को उठि उठि धावै, राम भजन परमारथ काचो ॥ संतनकी टकसाल चढौना, गुरुकी हाट कभू नहिं जावो । पंचविषयके मदमें मातो, अभिमानी हो बहुतक माचो ॥ यमद्वारेकी लाज न मानी नरक अग्निकी सहिली आंचो । चरणदास कहै सहजो बाई हरिकी शरण बिना नहिं बांचो ॥ २९ ॥

राग सारंग ।

हमारे ओषधि नाम धनीका । आधि व्याधि

तन मनकी खोवै शुद्धकरै बहुनीका ॥ अमर भए
जिन जिन यह खाई भवनगरी नहिं आवे। सतसं-
गतिका भवन बनावै परदा लाज लगावे ॥ जगत
वासना पवन चलत है सो आवन नहिं पावै। शुभ
कर्मनिले टेक टहलुआ दीपक ज्ञान जलावै ॥
नित्य अनित्य विचार सार गहुहो आसार बसावै।
जीवरूपकैं रोग भजै यो ब्रह्मरूप होजावै॥सहजो
बाई सुन हुलसावै चरणदास बतलावै ॥ ३० ॥

राग सारंग।

तेरीलीला अधिक सुहावनी। देखि देखि करि
मन हुलसत है संतनके मनभावनी ॥ ततगुणकर
ब्रह्मंड बनायो अधरधरो अचरजभयो। जाके मध्य
यही संसारा भाँति भाँति रँगरंग रह्यो ॥ सातद्वीप
नोखंड रचेहैं स्वर्गमृत्यु पातालही । इच्छा करत
सभी बनिआयो होय गयो ततकालही ॥ माया

अमर अपार तुम्हारी वरणिसकै कहा वेदहै। तीन गुणोंतक बुध पहुँचतहै परै तुम्हारो भेद है॥ क्षणमें उत्पति परलय क्षणमें जो चाहो सब कुछ बनै। चरणदास गुरु दृष्टि भई जब गुणावाद सहजो भने॥ ३१॥

राग सारंग।

परो मन हरिगुण गावन बान। बिन गोपाल और जो भाषो तोहिं गुरुकी आन॥ वेद माहिं ब्रह्मामुनि गावै शंकर सीं माहिं। शेष सहजमुख निशि दिन गावैं समय विचारत नाहिं। वीणलिये नारदमुनि गावैं गावें व्यासविचारी।गणपतिशारद गान करतहै गंधर्व सभी पुकारी॥ गुणवाद गावत प्रभु परसन बढै भक्तिको भाव। सुखदेव गावत चरणहीं दासा सहजोंकोभी चाव॥ ३२॥

राग पूरवी।

हरिको कोई न जानत भेद। सबके बडे सोई पचिहारे नेति नेति कह वेद॥ नालमाहिं ब्रह्मा फिरि आयो थकि फिरि तपही कीन। योग-ध्यान करि शंकर हारे थाल लेत भये लीन॥ भेद न पायो शेष नारदने सुरपति और गणेश। वाम-देव नारद सनकादिक निरे भक्तिके भेस॥ ज्ञानी गुणी मुनी ऋषि जेते योगेश्वर सिधि साध। चरण-दास कहै सहजो बाई पंडित पोथी लादि॥३३॥

राग पूरवी।

मन तोहिं कब उपजेगी ग्यान। इन्द्रिनके रससूं छुट निर्मल परब्रह्म गलतान॥ जगसूं पीठ कहो कब देहौ सन्मुख हरिकी ओडि॥ साधों-की संगति कब करिहौ कुटुँब जालको छोडि॥

जय करनेको कब तुम लगिहौ चरण कमलको ध्यान । निशिदिन आयु घटै तनु छीजै मनुष्य जन्मकी हान ॥ तुम जो कहो मैं कालिह करोंगो कालिह कालके हाथ । जा कारण ऐसी मति उपजै सो झूठोहै साथ ॥ चरणदास गुरु मोहिं बताओ सहजो हृदय राखि । भजनहिं सार बतायो सब मिलि वेद पुराणन भाषि ॥ ३४ ॥

राग बिलावल ।

गोविंदके गुण क्यों नहिं गावो । ममता नींद कहा मन सूतो जागि जागि हरिसूं चितलावो ॥ गुणगावत बहु पतित उधारे ऊँची पदवी दीन्हीं । जाति करण सूँ ऊपर कीन्हें आधिव्याधि विपदा हरि लीन्ही ॥ भवजल पार भये थिरहुए आवागमन नशायो । वैसीही तुम्हरी गति होगी करि जप औसर नीकोपायो ॥ आधीरात और तरुण अवस्था

उठकरि ध्यान लगावै । ताकी स्तुति शेष करतहै शिव ब्रह्मादिक शीशनवावै । चरणहि दास नवो-पद सेवो गुरु उपदेश सम्हारो । सहजो नौधाभक्ति करीजै आप तिरो औरनको तारो ॥ ३८ ॥

राग जैजैवंती ।

दशौ दिशा देखो तोको और कोई नहिं सांई । नखशिख राजरहो, वेदनके मध्यकह्यो । सूतहुँकी मालभयो, ऐसे सबमाहीं । सिंधहूकी लहरें जानो, तामें सब पानी मानो । ऐसे नाहीं दूजा ठानो सांई ॥ ईश्वर यो रूप छओ, ब्रह्ममंड सब होइ रह्यो, नानाही स्वरूपहयो, तेरी गति माई ॥ चरणदास गुरुदई, आतम विचार लई, सहजो बाई नहीं रही, जैसे जल छाई ॥ ३९ ॥

राग जैजैवंती ।

मेरे एक श्रीगोपाल, और नहीं कोई माई ।

आय बसे हिये माहीं, और दूजो ध्यान नाहीं, मेरी सब उनहीं ताई ॥ जातहूंकी कान तजी, लोकहूकी लाज भजी, दोनों कुलमाहिं बजी, कहाकरे सोई ॥ उघरीहै प्रीति मेरी, निश्चय हुई वाकी चेरी, पहरी है प्रेम बेरी, टूटै नहिं जाई ॥ मैं तो चरणदास भई, गतमत सब त्याग दई। सहजो बाई नाहीं रही, उठगई दोई ॥ ३७ ॥

राग परज।

तेरी गति किनहूं न जानीहो। ब्रह्मा शेष महेश्वर थाके बहुत बखानीहो ॥ चारवेद स्तुति करि थाके चारोंवानीहो। वादकरंते सब मत थाके चार जुवानीहो ॥ पांचतत्त्व तिरगुण हूं थाके बुद्धि थकानीहो। विद्या पढि पढि पंडित थाके अरु थाके ब्रह्मज्ञानीहो ॥ सबके परे जु अनभैहारी थाह न आनीहो। छानबीन करि बहुतक थाके हुई

खिसानीहो ॥ सुर नर मुनि जन गणपति थावे
बडे बिनानीहो ॥ चरणदासकी सहजो बाई भई
सिरानीही ॥ ३८ ॥ हरेकृष्ण २ राधाकृष्ण २ ।

इति सहजोबाईकृत " सहजप्रकाश "
सम्पूर्ण ॥ शुभमस्तु ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS